ग्रामीण महिला विकास संस्थान

GMVS

वार्षिक प्रतिवेदन 2019-2020

ग्रामीण महिला विकास संस्थान (GMVS, Ajmer)

ऊँचाईयों के शिखर की ओर बढ़ते कदम

GMVS

भागीरथ चौधरी

सांसद

लोकसभा क्षेत्र-अजमेर

(सदस्य-जल संसाधन संबंधी स्थायी समिति)

सत्यमेव जयते

चौयल हाऊस, बाईपास रोड़
मदनगंज–किशनगढ़, अजमेर (राजस्थान)
टी–5, अतुल ग्रोव रोड़, नई दिल्ली 110001
मो.नं. : +91 95713 96889, +91 94140 11998
फोन नं. : 01463-250999 (Fax)
E-mail : bhagirathchoudhary@gmail.com

–: शुभकामना संदेश :–

अत्यंत हर्ष का विषय है कि, हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी, ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बुबानी, अजमेर द्वारा वर्ष 2019–2020 की कार्य गतिविधियों का संकलन अपने वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन में प्रकाशित किया जा रहा है। जिसके लिये हार्दिक आभार एवं बधाई।

महिला सशक्तिकरण की दिशा में आपका संस्थान विभिन्न पहलुओं पर विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यक्रमों का संचालन कर महिलाओं का आत्मनिर्भर बनाने का कार्य कर रहा है। स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को प्रशिक्षण उपलब्ध कराकर आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास आज के कोरोना काल में निःसंदेह सराहनीय एवं प्रशंसनीय है। संस्थान द्वारा आजीविका संवर्द्धन हेतु ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है।

आपका संस्थान मानव मात्र की सेवा करते हुये प्रगति पथ पर निरन्तर अग्रसर रहें। उक्त गतिविधियों के सफल संचालन हेतु संस्थान के सचिव श्री शंकर सिंह रावत एवं संस्थान परिवार को हार्दिक बधाई देते हुये शुभकामनाएँ प्रेषित करता हुँ एवं आपके प्रगतिशील संस्थान और पुरे संस्थान परिवार के उज्जवल भविष्य कि कामना करता हुँ।

भागीरथ चौधरी
सांसद
लोकसभा क्षेत्र, अजमेर

सुरेश सिंह रावत
विधायक, विधानसभा क्षेत्र पुष्कर
पूर्व संसदीय सचिव,
राज्यमंत्री राजस्थान सरकार

सत्यमेव जयते

कार्यालय : यूनिवर्सिटी तिराहे के पास
भूणाबाय, अजमेर (राजस्थान)
निवास : बाबा फार्म, मु.पो.–मुहामी,
वाया–गगवाना, जिला–अजमेर (राजस्थान)
मो.नं. : +91 9414006464 +91 9461146464
E-mail : sureshrawat29@gmail.com

–: शुभकामना संदेश :–

यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि, हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी समाजसेवा को ही अपना सर्वोपरी ध्येय मानने वाले संस्थान ग्रामीण महिला विकास संस्थान, बुबानी द्वारा समाज सेवा हेतु संस्थान के मुलतत्वों को व संस्थान की उपलब्धियों को जन–जन तक पहुँचाने, समाज सेवा हेतु प्रत्येक जन को प्रेरित करने के उद्देश्यार्थ वर्ष 2019–20 की कार्य गतिविधियों का वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन का प्रकाशन किया जा रहा हैं।

ग्रामीण महिला विकास संस्थान, बुबानी द्वारा महिला सशक्तिकरण के तहत कार्य करते हुए महिलाओं को निःशुल्क सिलाई, बुनाई और अन्य हस्तशिल्प जैसे कुटीर उद्योगों के निःशुल्क प्रशिक्षण से सभी के जीवनयापन के स्तर को उपर उठाने व समाज के सम्पन्न वर्गों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने हेतु आर्थिक एवं सामाजिक स्तर में अवर्णनीय उत्थान लाने का कार्य किया जा रहा हैं जो कि निश्चित ही सभी के लिए प्रेरणाप्रद हैं। संस्थान द्वारा आजीविका संवर्द्धन हेतु ऋण भी उपलब्ध कराया जा रहा हैं, जो कि इस कोरोना काल में भी महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में अतुल्य सहयोग है।

मैं सेवा कार्यो के सफल संचालन हेतु संस्थान सचिव श्री शंकर सिंह रावत एवं संस्थान परिवार के प्रयासों की सराहना करते हुए प्रकाशित किये जा रहे संस्थान के वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन के प्रकाशन की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित कर आशा करता हूँ कि संस्थान जनसेवा का पुनीत कार्य निरन्तर करता रहेगा तथा आमजन भी इस प्रतिवेदन के माध्यम से परोपकार व जनसेवा हेतु प्रेरित होगें।

जय – जय पुष्कर राज

(सुरेश सिंह रावत)
विधायक, पुष्कर

GMVS

चन्द्रभान सिंह ''आक्या''
विधायक
विधानसभा क्षेत्र-चित्तौड़गढ़

सत्यमेव जयते

9/31, विधायक नगर (पूर्व)
ज्योति नगर, जयपुर (राज.)
9, कृष्णा वाटिका–III,
मधुवन सेंती, चित्तौड़गढ़ (राज.)
फोन नं.: 01472–243666
मोबाईल नम्बर : 94133–15722
E-mail : mlachittorgarh@gmail.com

–: शुभकामना संदेश :–

मुझे यह जानकर बेहद खुशी है कि, हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी, ग्रामीण महिला विकास संस्थान–चित्तौड़गढ़ अपना कार्य प्रगति प्रतिवेदन 2019–2020 का प्रकाशन कर रही है।

संस्थान द्वारा राजस्थान स्टेट एड्स कंट्रोल सोसाइटी जयपुर (राज.) के माध्यम से चित्तौड़गढ़ जिले में प्रवासी लोग जो विभिन्न राज्यों से है। ये प्रवासी लोग बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखण्ड, मध्यप्रदेश, बंगाल, असम, हरियाणा, पंजाब, ओड़िसा, दिल्ली व राजस्थान के अन्य जिलों से चित्तौड़गढ़ आकर अपनी आजीविका चलाने के लिए मजदूरी (फैक्ट्री वर्क, ईंट, रोड़ व बिल्डिग निर्माण, ट्रांसपोर्ट लोडिंग, FCI, पेंटर, वेल्डर) व अन्य कार्य करते है। अपने गाँव कम से कम 3 माह में एक बार जाते है। ऐसे प्रवासियों को जागरूक करके जहाँ वह रह रहे है उस स्थान पर उनको निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर, नुक्कड़ नाटक, डिमांड जनरेट, समूह बैठक, एकल बैठक, क्राइसिस मीटिंग, एडवोकेसी मीटिंग, DIC सेन्टर, परामर्श सेवायें इत्यादि सेवाओं के माध्यम से लोगों को नेत्र जाँच करके नंबर का चश्मा देना व एच.आई.वी. जाँच व जनरल, स्वास्थ्य जाँच करके पॉजिटिव व्यक्ति को जिला अस्पताल के ICTC सेन्टर व ART सेन्टर से जुड़ाव करवा कर ईलाज करवाना है।

साथ ही प्रवासियों को अपने गाँव व राज्य में जाने पर यह निःशुल्क सुविधाएँ वहाँ पर उपलब्ध करवाई जाती है। संस्थान द्वारा समय पर फोलोअप किया जाता है। इसी के साथ संस्थान स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यावरण व रोजगार के क्षेत्र में कार्य करते हुए अपनी मजबूत सकारात्मक उपस्थिति दर्ज करवाने में सफलता पूर्वक सोपान चढ़ने पर संस्थान से जुड़े प्रत्येक पदाधिकारी व कार्यकर्ता को मेरी तरफ से अनेक साधूवाद व चित्तौड़गढ़ जिले के विकास करने पर धन्यवाद।

आने वाले समय में संस्थान अपने कार्य क्षेत्र में विस्तार करते हुए नये आयाम स्थापित करें। तथा इसी तरह मानव मात्र की सेवा करते हुए प्रगति पर निरंतर अग्रसर रहे उक्त कार्यों के लिए संस्थान सचिव शंकरसिंह रावत, जिला कार्यक्रम अधिकारी सुश्री ममता सिंह चौहान, फील्ड ऑफिसर श्री नरेन्द्र गर्ग व पूरे संस्थान परिवार के उज्जवल भविष्य की कामना करता हुँ।

(चन्द्रभान सिंह ''आक्या'')
विधायक, चित्तौड़गढ़

अनिल कुमार माथुर

अध्यक्ष

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

प्लाट नं. 111–116, सिद्धि विनायक कॉलोनी
खोड़ा गणेश रोड़, मदनगंज–किशनगढ़
जिला–अजमेर (राज.) 305801
मोबाईल नं. : 94142–58396

अध्यक्षीय सम्बोधन

मैं अपार खुशी के साथ इस वर्ष का वार्षिक प्रतिवेदन आप सभी को समर्पित करते हुए यह कहना चाहुँगा कि किसी भी कार्य को सफलता पूर्वक करने के लिए सबसे पहले हमारे पास एक निश्चित, स्पष्ट, व्यावहारिक आदर्श, एक लक्ष्य, एक उद्देश्य होना चाहिए। उसके बाद उन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक साधन होने चाहिए जिससें कि हम उन साधनों का उपयोग कर उन्हें अंत तक समायोजित करें। ऐसी ही कोई यात्रा रही हैं हमारे ग्रामीण महिला विकास संस्थान की जिसकी शुरूआत मेरे बचपन के संघर्ष व आस–पास के परिवेश में विभिन्न सामाजिक व आर्थिक समस्याओं को देखकर हुई तब से लेकर अब तक हमारी संस्था विभिन्न कार्यकर्ताओं, सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं के सहयोग व मागदर्शन से ग्रामीण क्षेत्रों में सभी समस्याओं के साथ–साथ गरीबी, बेरोजगारी, कुपोषण, महिला समस्या, अशिक्षा, स्वास्थ्य आदि अनेकानेक चुनौतीपूर्ण मुद्दों को लेकर कार्य करते हुए उक्त समस्याओं के निराकरण के लिए संचालित विभिन्न गतिविधियों व कार्यक्रमों का सफल संचालन कर रही है।

हम इन सभी वर्षो में हमारा समर्थन करने के लिए हमारी सभी सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं को कोटि–कोटि धन्यवाद देते है। आप में से प्रत्येक ने हमें बहुत योगदान दिया हैं। और हमारे मिशन को पूरा करने में मदद की है।

अन्त में यही कहना चाहुँगा कि किसी को भी अपने सपनों को छोड़ना नहीं चाहिए और यही वह जगह है जहाँ अपनी पहचान बनाना चाहते हैं।

(अनिल कुमार माथुर)
GMVS अजमेर

GMVS

शंकरसिंह रावत

निदेशक

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

प्लाट नं. 111–116, सिद्धि विनायक कॉलोनी
खोड़ा गणेश रोड़, मदनगंज–किशनगढ़
जिला–अजमेर (राज.) 305801
मोबाईल नं. : 96729–79032, 90792–07103

निदेशक की कलम से .....

ग्रामीण महिला विकास संस्थान की 22 वर्ष की यात्रा बहुत ही संतोषजनक रही है। ग्रामीण महिला विकास संस्थान विकास के क्षेत्रों में आगे बढ़ता हुआ अपनी पहुँच राजस्थान राज्य के 4 जिलों में कर अपने कार्यों को आगे बढ़ा रहा है। हमारा लक्ष्य है कि ज्यादा से ज्यादा लोगों की शिक्षा, स्वास्थ्य, सशक्तिकरण के माध्यम से जिन्दगी को बदल सकें उन्हें एक नई राह दिखाई जाये जिससे वे निरन्तर आगे बढ़ते रहे। हमारे इस वर्ष के कार्यों में आँखों के स्वास्थ्य का कार्यक्रम ट्रकर्स आई हेल्थ केयर गौरतलब है।

संस्थान के सभी कार्यकर्ताओं तथा दानदाताओं के सहयोग से हमारी संस्थान ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के हर विकास से कदम मिला रही है तथा तज आंधियों में कुछ दीए जला रहे है जिसके लिए सभी का तहे दिल से शुक्रिया करता हुं और आगे भी इसी सहयोग व मार्गदर्शन की आशा करता है।

भारत की 70: जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास कर रही है। और अन ग्रामीण महिलाओं, किसानों व युवाओं का विकास हमारी मुख्य प्राथमिकता है। महिलाओं को आत्मनिर्भर और स्वावलम्बी बनाने के लिए महिला स्वयं सहायता समूह तथा कौशल विकास के माध्यम से उन्हें आर्थिक रूप आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया है। संस्थान की स्थापना से लेकर अब तक विभिन्न कार्यक्रमों व परियोजनाओं के माध्यम से गरीबी, बेरोजगारी, शिक्षा, स्वास्थ्य, वित्तीय जागरूकता, महिला सशक्तिकरण, स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षण व सरकारी योजनाओं से गरीबों को जोड़ना इत्यादि कार्य करते हुए संस्थान अपने उद्देश्यों से गरीबों को जोड़ना इत्यादि कार्य करते हुए संस्थान अपने उद्देश्यों से गरीबों को जोड़ना इत्यादि कार्य करते हुए संस्थान अपने उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु योजनाबद्ध रूप से अग्रसर है।

संस्थान द्वारा विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यक्रमों का सफल संचालन किया जा रहा है जिसका विस्तृत विवरण 2019–20 के वार्षिक प्रतिवेदन के रूप में आपके हाथों में प्रेषित है।

मैं इस संस्थान एवं संस्थान के सभी कार्यकर्ताओं के उज्जवल भविष्य की कामना करता हुँ।

(शंकर सिंह रावत)

GMVS अजमेर

Gramin Mahila Vikas Sansthan (GMVS), Ajmer (Rajasthan)
Area of Operation and Office Locations

RAJASTHAN STATE

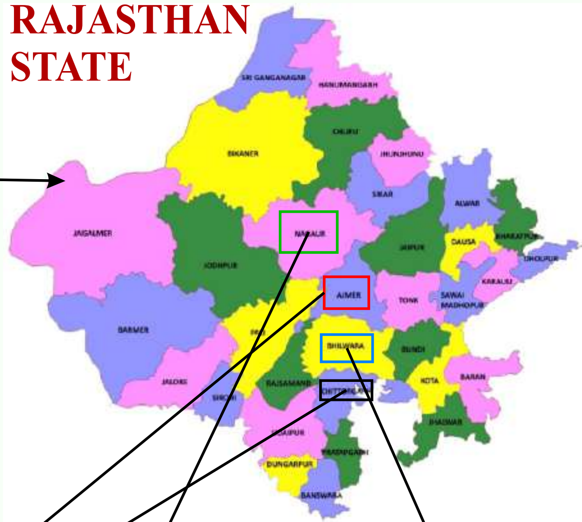

Ajmer District

Nagaur District

Chittorgarh District

Bhilwara District

GMVS

एक नजर ...

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

ट्रकर्स कम्यूनिटी लाईवलीहुड स्ट्रेन्थनिंग कार्यक्रम

GMVS

एक नजर ...

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

स्वयं सहायता समूह डिजिटलीकरण ई–शक्ति कार्यक्रम

GMVS

ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी, अजमेर (राजस्थान)
Gramin Mahila Vikas Sansthan-Bubani, Ajmer (Rajasthan)

पृष्ठभूमि :–

ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी (अजमेर), राजस्थान संस्था पंजीकरण सोसायटी अधिनियम 1958 की धारा 28 एवं आयकर अधिनियम 1961 की धारा 12–ए व 80 जी तथा FCRA एक्ट 1976 के अधीन पंजीकृत एक स्वयं सेवी संस्था हैं।

ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी (अजमेर), मानव समाज विषयक उद्देश्य जिसमें ग्रामीण महिला विकास एवं उत्थान विशेष के लिए गठित स्वैच्छिक संगठन हैं, जो वृहद स्तर पर ग्रामीण सुमदाय के साथ उनके सामाजिक सशक्तिकरण एवं आजीविका संवर्द्धन के लिए कार्य कर रही हैं। संस्थान विविध और व्यापक स्तर पर समस्या प्रदान मुद्दों जैसे– स्वास्थ्य, शिक्षा, बच्चों की देखभाल, पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक मुद्दें, स्वरोजगार आदि पर 1998 से विविध कार्यक्रमों का संचालन कर रहा हैं। वर्तमान में संस्था राजस्थान के 04 जिलों यथा अजमेर, चित्तौड़गढ़, नागौर व भीलवाड़ा में विभिन्न गतिविधियों का संचालन कर रही हैं।

विज़न :–

ऐसे सशक्त समाज की स्थापना करना जो शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक, सामाजिक एवं रोजगार की दृष्टि से आत्मनिर्भर हो।

मिशन :–

मानवीय एवं प्राकृतिक संसाधनों के समुचित उपयोग से पिछड़े, अभावग्रस्त, गरीब समाज की महिलाओं को स्वयं सहायता समूह, कलस्टर व फेडरेशन के माध्यम से महिलाओं को आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से सशक्त करना ग्रामीण लोगों, वंचित वर्ग खासकर महिलाओं/बच्चों को शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, पेयजल व आजीविका के साधन सुनिश्चित करवाना।

संस्था के उद्देश्य :–

- समस्याग्रस्त गाँवों में स्वच्छ पीने के पानी की व्यवस्था करने में गाँव वालों की मदद करना।
- ग्रामीण क्षेत्र में ग्रामीणों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करते हुए उन्हें अच्छा स्वास्थ्य बनाये रखने में मदद करना एवं मातृ–शिशु कल्याण कार्यक्रम को गाँव–गाँव तक पहुँचाना।
- कृषि एवं पशुपालन के लिए ग्रामीणों को आधुनिक जानकारी उपलब्ध कराकर उन्हें ज्यादा पैदावार एवं ज्यादा पशुपालन में उनकी समस्याओं को कम करने में मदद करना।
- महिला विकास में ग्रामीण महिलाओं की रूचि पैदा करना तथा महिला कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं की समस्याओं के निराकरण के लिये महिला मण्डल एवं महिला गोष्ठियों का आयोजन करना।

* ग्रामीण दस्ताकारों को बढावा देने में सहयोग एवं रोजगार उपलब्ध कराना।
* निम्न आय वर्ग के लड़के लड़कियों को उचित शिक्षा दिलवानें की व्यवस्था करना।
* राजस्थान या राजस्थान के बाहर स्थित संस्थाओं जिनका उद्देश्य ग्रामीण महिला विकास संस्थान, बूबानी जैसा होगा उनसे सहयोग प्राप्त करना एवं गतिविधियों मे ंतालमेल बनाये रखना।
* सड़क दुर्घटनाओं को कम करना।
* सामुदायिक विकास कार्यक्रम को बढ़ावा देना।
* पर्यावरण स्वच्छ रखने के लिए पेड़ पौधों की जागरूकता रखना।
* भूमी कटाव को रोकने हेतु मेड बन्दी।
* महिलाओं को विभिन्न प्रशिक्षणों के माध्यम से आधुनिक तकनीकों से जोड़ना।
* महिला व बाल विकास कार्यक्रम का संचालन व लोगों को जागरूक बनाये रखना।
* संस्था के उद्देश्यों एवं कार्यकलापों को प्रचारित करना, किताबों का मुद्रण एवं प्रकाशन तथा पुस्तकालयों की स्थापना करना।
* ग्रामीण दस्तकारी को बढ़ावा देने में सहयोग करना क्षेत्र में रोजगार के अवसर पैदा करने हेतु खादी ग्रामोद्योग की गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए नियमानुसार ऋण प्राप्त करना।
* संस्था के द्वारा ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य सेवायें प्रदान की जायेगी जैसे HIV AIDS जागरूकता, सामुदायिक स्तर पर आँखों की जाँच, माता व शिशु स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य पर क्षेत्र विशेष हेतु कार्यक्रम।
* क्षेत्र में अधिक संख्या में ट्रक ड्राईवर परिवारों के होने के कारण संस्था ट्रक ड्राईवर परिवारो के साथ स्वास्थ्य, शिक्षा व आजीविका पर कार्य करेगी।
* इसके अतिरिक्त संस्था ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में सभी विकास के कार्य क्षेत्र के आवश्यकतानुसार करेगी।
* ट्रक चालको एवं क्लीनरों की आँखों की जाँच कर चश्मा प्रदान करना तथा नियमित आँखों की जाँच तथा देखभाल हेतु प्रेरित करना।
* संस्था ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में तकनीकि प्रोत्साहन एवं कौशल विकास पर कार्य करेगी।
* संस्था महिलाओं के फेडरेशन को मजबूत करने एवं SHG बनाने व सशक्त करने का कार्य करेगी।
* संस्था मानवीय आवश्यकता हेतु समुदाय को लगातार जाग्रत करेगी।
* संस्था द्वारा शिक्षा प्रसार हेतु शिक्षण कार्य कराया जायेगा एवं तकनीकि विज्ञान प्रशिक्षण की व्यवस्था कराई जायेगी।
* संस्था द्वारा प्राकृतिक सौन्दर्य एवं प्रदूषण दूर करने हेतु बंजर भूमि पर वृक्षारोपण का कार्य करने की व्यवस्था करेगी।

GMVS

लक्षित हस्तक्षेप परियोजना चित्तौड़गढ (माईग्रेन्ट टी.आई.)
Targeted Intervention Programme, Chittorgarh (Migrant T.I.)

आज भले ही मशीनी युग हो, परन्तु मजदूर जहाँ होगा, वही पर सारे कार्यो की पूर्ति हो रही है। हमारे भारत देश की जनता का अधिकतर भाग, मजदूर वर्ग में आता है। मजदूर लोग ना केवल अपने लिए, बल्कि एक बहुत बड़े व्यापार संघ का सहयोगी रहा है। कहने को तो मजदूर साधारण सा अदना सा आदमी है, परन्तु उसकी महत्ता को देखे तो, आज ऐसी कोई भी जगह नहीं है। जहाँ वो अपनी उपस्थिति दर्ज नहीं करा पा रहा हो। आज उनके बिना कोई भी कार्य पूरा किया जाना मुमकिन नहीं है। मजदूर लोग देश में राज्यों की जरूरत के अनुसार एक कोने से दूसरे कोने में अपना प्रवास बनाये हुए हैं। इस तरह प्रवासी मजदूर का एक बहुत बड़ा भाग बड़ी बड़ी फैक्ट्रियों में कार्यरत है। जिनको कही पर नियमित दर्शाया नहीं जाता है। इसका मुख्य कारण है कि सरकारी तंत्र के अनुसार कोई भी मजदूरों को प्रवासी नहीं दिखाना चाहता है।

भारत देश में ही राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में मजदूर इंडस्ट्री एवं अन्य प्रकार के कार्यों में लगे हुए है। ये अपने जीवन को चलाने के लिये छोटे—बड़ें काम को करके अपना जीवन यापन करते है। प्रवासी मजदूर वो लोग है जिनका शहरों में अपना घर नहीं हो, ना ही वहाँ कि नागरिकता या राशन कार्ड हो। **प्रवासी लोग अपनी आजीविका चलाने के लिए, अपना घर, परिवार छोड़कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर काम करने के लिये कम से कम 3 माह या 6 माह में 1 बार अपने पेत्रक गाँव जाते हैं। तथा सिंगल रहने के कारण उनका व्यवहार उच्चजोखिमपूर्ण होता है।**

टी.आई. कार्यक्रम के अनुसार मुख्यतः उच्चजोखिम व्यवहार के लोगों को ही रजिस्टर्ड करना हैं। उनके उच्च जोखिम व्यवहार को परिवर्तन करने, या उस व्यवहार में कमी लाने के लिए समय समय पर वन टू वन या समूह में मिलना उनसे बातचीत करना, मीटिंग करना, परामर्श करना, निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर में जाँच करवाना, टी.आई. कार्यक्रम की अन्य गतिविधियों के माध्यम से प्रवासी मजदूरों को जुड़ाव करवाना ताकि वह लोगे ना केवल संस्था से जुड़े बल्कि उनको सरकारी व अन्य योजनाओं की जानकारी हो, उन योजनाओं से जुड़ सकें माईग्रेंट को एच.आई.वी. व टी.बी की सामान्य जानकारी प्राप्त हो सकें साथ ही एच.आई.वी. व टी.बी. की जाँच व लक्षण पाए जाने वाले माईग्रेंट को ICTC, ART, डॉट केन्द्रों से जोड़ना है। ताकि उनके स्वास्थ्य के प्रति सजग रहे। अपने परिवार को जागरूक कर सकें।

माईग्रेंट टी.आई. कार्यक्रम राजस्थान स्टेट एड्स कन्ट्रोल सोसायटी के माध्यम से 1 मार्च 2014 से ग्रामीण महिला विकास संस्थान चित्तौड़गढ में चलाया जा रहा है। माईग्रेन्ट टी.आई. कार्यक्रम में चित्तौड़गढ़, सावा, निम्बाहेडा, कपासन, चन्देरिया के विभिन्न जगहों पर फैक्ट्रियों व अन्य स्थानों पर माईग्रेंट को जागरूक किया जा रहा है। इनको टी.आई. कार्यक्रम से जोड़कर सेवायें दी जा रही है।

चित्तौड़गढ़			
रेलवे फाटक	इंडियन ऑयल	पंचवटी	अन्य

अदितीय सावा		
मीरा कॉलोनी	जी.डी. सी.एल.	एल.एण्ड टी

निम्बाहेड़ा				
न्यूवोको	जेके मांगरोल	जेके निम्बाहेड़ा	वंडर	अन्य

कपासन			
गणपति फर्टिलाजर	केके कोटेक्स	मारुती ब्रिक्स	अन्य

चंदेरिया				
शिव नगर	रेलवे ट्रेक	डालडा	जिंक	बी.सी. डब्ल्यू

उपरोक्त सभी जगहों पर ग्रामीण महिला विकास संस्थान की टीम के द्वारा, टी.आई. कार्यक्रम को लोगों तक पहुँचाया जा रहा है। इन सभी लोगों के साथ इनके निवास स्थान, कार्य स्थल व इनके मिलने के स्थान पर जाकर कांटेक्ट किया जाता है। इन प्रवासी लोगों को चाय की होटल, रेस्टोरेंट या चाय की थड़ी दुकान, पान की दुकान, सब्जी/फल का ठेला, जनरल स्टोर, किराणा स्टोर, वाईन शॉप, लेबर कॉलोनी, रेजीडेंस आदि स्थानों पर भी मिला जा सकता है ये सभी प्रवासी फैक्ट्री, क्षैत्रों के आस–पास ही रहतें है या फिर ये सभी प्रवासी लेबर कॉलोनी या गाँव के आस–पास रहते हैं। कार्यक्रम के अन्तर्गत इनको DIC सुविधाएँ उपलब्ध करवायी गयी है ताकि वो DIC पर आकर विश्राम, मनोरंजन के साथ स्वास्थ्य से जुड़ी जानकारियों को प्राप्त कर सकें। अधिकतर प्रवासी अकेले आते है, और यह समूह में एक ही कमरे में 10 से 20 लोग एक साथ रहते हैं। इन सभी का कार्य करने का समय 8 से 12 घंटे तक का होता है। चूंकी ये लोग बाहर से आते है तो अधिक से अधिक काम करना ताकि ज्यादा कमाई करके घर ले जा सकें प्रवासी लोग बहुत मेहनती होते है इसलिए इनका खाना पीना भी वैसे ही रहता है। इन सभी प्रवासियों के खाना बनाने के लिए भंडारी होते है, जो इन सभी का खाना बनाने का काम करते है। आधुनिकता व मशीनी युग में इनके अनेक कामों में जहाँ कमी आई है। वही नये–नये रोजगार भी इनको मिले है। आज भी बहुत सारे ऐसे कठिन काम हैं जो इनसे ही संभव है।

आज प्रवासी अपने गाँव से यहाँ पर परिवार/पत्नि को अकेले छोड़कर यहाँ आकर रहते है, परन्तु जहाँ रहते है वहाँ पर और भी बहुत से लोग रहते है। समूह में रहने के कारण, तरह तरह के लोग तरह–तरह के विचार व स्वभाव के लोग शादीशुदा व कुवारे एक ही स्थान पर रहते है। जिसके कारण उच्च जोखिम व्यवहार में विभिन्नता का समूह इनके इर्द गिर्द घुमता रहता है। कुछ प्रवासी लोग उच्च जोखिम व्यवहार में नहीं होते परन्तु लोगों के साथ जाने अनजाने में सम्मिलित हो जाते है। धीरे–धीरे उनका उच्च जोखिम व्यवहार एक आदत बन जाता है।

ये उच्च जोखिम व्यवहार जैसे :– धुम्रपान करना (दारू/शराब, अफीम/गांझा, सुलपा/हुक्का, गुटका) का सेवन करना महिला साथी/यौनकर्मियों के साथ असुरक्षित यौन सम्पर्क करना या उनके अड्डों पर जाना, एक से अधिक लोगों के साथ यौन सम्पर्क रखना, बस यही से प्रवासियों को एच.आई.वी./एड्स, यौन रोग, टी.बी. का खतरा शुरू हो जाता है इस तरह संक्रमण एक प्रवासी से दूसरे प्रवासी से तीसरे प्रवासी को फैलता है चुकि प्रवासी मजदूर ज्यादा पढ़े लिखे नहीं होते है। इसलिए इनमें हर पहलूओं पर जागरूकता की कमी होती है। अन्य पहलु की तरह ही स्वास्थ्य के एच.आई.वी. एड्स व टी.बी. के प्रति भी प्रवासियों की समझ बहुत ही कम होती है, जिसके कारण एच.आई.वी. संक्रमण का प्रसार अधिक होता है। वर्तमान में एच.आई.वी. /एड्स यौन रोग, टी.बी. के साथ–साथ कोरोना भी अपने पैर पसार रहा है। टी.आई. द्वारा प्रत्येक कार्य में कोरोना के प्रति भी जागरूक किया जा रहा है।

प्रवासी लोगों के कार्यो के अनुसार वर्गीकरण

- कंस्ट्रक्शन वर्कर
- हम्माल
- ट्रांसपोर्टेड
- माइनिंग
- इंडस्ट्री वर्कर
- अन्य

टी.आई. सेवाएँ व गतिविधि जो संस्थान के माध्यम से की जा रही है :–

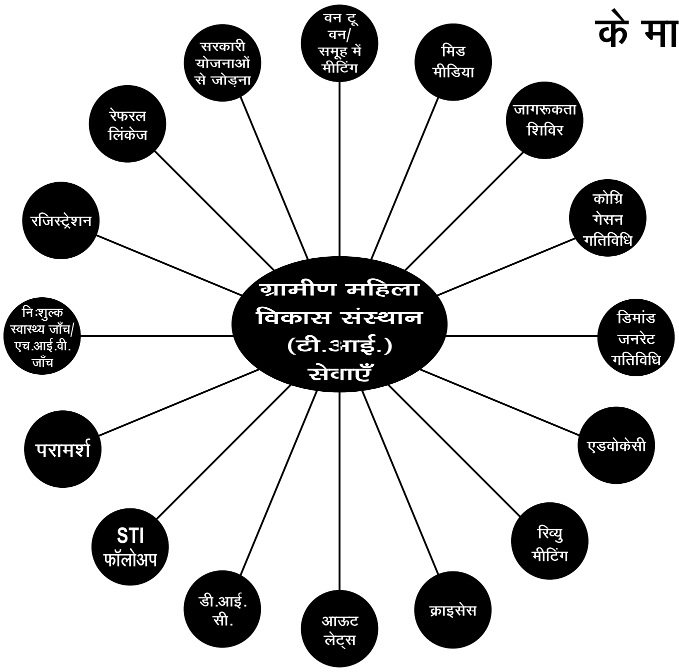

1. वन टू वन मीटिंग/समूह मीटिंग :– इनके माध्यम से प्रवासी लोगों से एक–एक या समूह में मिलना, समूह चर्चा या बैठक करना। साथ ही उनको HIV/AIDS, TB, STI/RTI, कंडोम कोरोना के प्रति जागरूक करना।

1. मिड मिडिया :– नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से प्रवासी लोगों HIV/AIDS, TB, STI/RTI, कंडोम कोरोना के प्रति जागरूक करना। इसमें ड्रामा टीम HIV/AIDS, TB, STI/RTI, कंडोम, कोरोना व अन्य संक्रमण से कैसे बच सकते है। कंडोम के सही उपयोगिता की जानकारी दी जाती है। साथ ही संस्थान से जुड़ने की जानकारी दी जाती है।

2. जागरूकता शिविर :– इसका आयोजन प्रवासियों को निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर की जानकारी देने के लिए किया जाता है। ताकि सभी को शिविर में लाया जा सकें।

3. कांग्रिगेसन इवेंट :– इसके माध्यम से लोग जहाँ पर एकत्रित होते है वही पर इसको करवाया जाता है ताकि अधिक से अधिक लोगों का इस इवेंट व टी.आई. परियोजना से जुड़ाव बना सकें।

4. डिमांड जनरेट गतिविधि :– ये प्रवासी मजदूर लोगों की जरूरत के अनुसार कार्यक्रम करवाया जाता है। इसके माध्यम से भी प्रवासियों को जोड़ा जाता है।

5. एडवोकेसी :– इस गतिविधी में प्रवासी लोगों के लिए की जाने वाली पेरवी है। जिससे CSR/HR, ठेकेदार, सरदार लोग जो प्रवासियों के लिए यदि कोई भी गतिविधि या कैंप का आयोजन नहीं होने दे रहे है। उनके साथ पेरवी करके समझायिस करे की किस तरह ये कार्यक्रम जरूरी है। इसके लिए एडवोकेसी कमेटी भी बनी हुई है।

6. रिव्यु मीटिंग :– ये मीटिंग साप्ताहिक, मासिक, त्रेमासिक होती है। इनके माध्यम से सभी स्टाफ के लोगों के कार्यों का अवलोकन M&E, PM, PD करते है। टी.आई. सम्बंधित सभी रिकार्ड्स जाँच व डेटा मूल्यांकन का काम M&E, PM, PD की जिम्मेदारी होती है।

7. क्राईसेस :– प्रवासी लोगों के बीच में यदि कोई वाद विवाद हो जाये तो संस्थान के स्टाफ / क्राईसेस कमेटी के माध्यम से वाद–विवाद को सुलझाने में मदद कर सकती है।

8. आउटलेट्स :– इन आउटलेट्स से प्रवासी कंडोम को खरीद सकता है, यहाँ आसानी से कम रेट में मिल सकते है।

9. डी. आई. सी. :– DIC तीन है, पहली ऑफिस में, दूसरी चन्देरिया, तीसरी सावा में इन DIC में प्रवासी मजदूर लोग मनोरंजन, आराम करना, परामर्श, क्लिनिक सुविधा व कंडोम भी खरीद सकते है। DIC कमेटी भी बनी हुयी है जो प्रवासी लोगों को क्या–क्या सुविधाएं इसके माध्यम से दे सकते है इस पर ध्यान रखती है।

10. STI फोलोअप :– प्रवासी यदि कोई भी STI निकलता है तो उसको डॉक्टरी जाँच कर दवाँई दी जाती है समय–समय पर फोलोअप किया जाता है।

11. परामर्श :– परामर्शकर्ता HIV की 14 प्रकार के परामर्श के अलावा कोरोना के प्रति 3 प्रकार व TB के परामर्श का उपयोग करता है। प्रवासी के उच्च जोखिमपूर्ण व्यवहार की जानकारी देकर व लेकर समझता है। उच्च जोखिमपूर्ण व्यवहार को जानकर उसमें कमी लाने व प्रवासी को समझाना ही परामर्शकर्ता का मुख्य कार्य है।

12. निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच/HIV जाँच :– प्रवासी लोगों को निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच के साथ HIV की भी जाँच की जाती है। इसके साथ ही यदि VDRL किट भी मौजूद हो तो साथ में ये जाँच भी की जाती है ये सभी जाँचें फ्री में की जाती है।

13. रजिस्ट्रेशन :– प्रवासी लोगों का रजिस्ट्रेशन तीन माध्यम से होता है। परामर्श, DIC, कैंप, इन सभी सर्विस में से किसी एक के माध्यम से ही नामांकन किया जाता है। प्रत्येक वर्ष 10000 लोगों को रजिस्ट्रेशन करने का टारगेट है।

14. रेफरल व लिंकेज :– इनके माध्यम से प्रवासी लोगों को आवश्यकता अनुसार उनको अन्य सर्विसेज से लिंक व रेफरल करना होता है। HIV जाँच में पॉजीटीव आने पर ICTC, ART से लिंक करना, यदि TB है तो डॉट सेंटर से लिंक करवाना है।

15. सरकारी / गैर सरकारी योजनाओं से जोड़ना :– प्रवासी लोगों को सरकारी /गैर सरकारी सुविधाओं से जोड़ना है, ताकि वह कही पर भी हो वह सभी सुविधाओं का लाभ ले सके।

प्रत्येक वर्ष की भाँति ही इस वर्ष 2019–2020 में 10000 प्रवासी मजदूर लोग जो उच्च जोखिम व्यवहार से रहित जीवन यापन कर रहे थे उन सभी प्रवासी लोगों को टी.आई. परियोजना से एच.आई.वी. के प्रति जागरूक किया जा रहा है।

ये प्रवासी लोग जिन राज्यों से है वो निम्न है :– प्रवासी लोग न केवल राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, पंजाब, झारखण्ड, हरियाणा, बिहार, गुजरात, उड़ीसा, असम, नेपाल से संबंधित है अधिकतर प्रवासी लोग इन सभी राज्यों के जिलों, ब्लॉकों, पंचायतों, तहसीलों व गाँवों से है। ग्रामीण लोगों की संख्या ज्यादा है इनको काम की जरूरत ज्यादा है। प्रवासी लोग बहुतायत मात्रा में एक राज्य से दूसरे राज्य में बहुत ही शीघ्रता से इधर–उधर पलायन करते हैं।

परियोजना का उद्देश्य :–

- 31 इंडीकेटर्स का अनुसरण करना।
- 40000 लोगों से एकल व समूह में बैठक करना।

* DIC में एकल व समूह में बैठक करना।
* कंडोम उपलब्ध करवाना व महत्ता समझाना।
* अधिक से अधिक प्रवासी लोगों को टी.आई. से जोड़ना।
* सरकारी / गैर सरकारी सुविधाओं से जुड़ाव करवाना।
* 10000 उच्च जोखिम व्यवहार के प्रवासी लोगों का रजिस्ट्रेशन करना।
* परामर्श करना, निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच व HIV जाँच, पॉजीटिव को रेफरल व लिंकेज करना।
* प्रवासी को अन्य राज्यों में जाने पर, वहाँ भी सरकारी सुविधाओं को उपलब्ध करवाना।
* प्रवासियों को उनकी सुविधा के अनुसार टी.आई. कार्यक्रम उपलब्ध करवाना।

रणनीति :–

* उच्च जोखिम व्यवहार के प्रति जागरूकता लाना, ताकि वो सुरक्षित व्यवहार अपना सकें।
* टी.आई. गतिविधियों व सर्विसेस में अधिक संख्या में लोग जुड़कर लाभ ले सकें।
* बड़ी साइट्स कवरेज करे ताकि, कम समय में अधिक लोगों तक पहुँच बन सकें।
* मिड मिडिया से लोगों में HIV/AIDS, TB, STI RTI के प्रति जागरूकता लाना।
* महिला व पुरूषों के अनुसार बैठक का आयोजन करना।
* कंडोम की उपयोगिता समझाना।
* अनुकूल वातावरण बनाकर सर्विसेस प्रवासी तक पहुँचाना।
* कोरोना के प्रति जागरूक करना।
* सभी गतिविधियाँ व सर्विसेस प्रवासियों के समय अनुसार हो।
* एडवोकेसी, क्राईसेस मेंजमेंट।

उपलब्धियाँ :–

* सभी फैक्ट्रियों में आसानी से पहुँच बनाना।
* HIV/STI की जाँच उनके स्थान पर CBT के माध्यम से करना।
* कलक्टर, SDM व रशद विभाग व अन्य विभागों तक पहुँच बनाना।
* सुपरवाइजर व स्टेक होल्डर से समय–समय सहायता प्राप्त करना।
* प्रवासियों को उनके समय अनुसार सर्विसेस उपलब्ध करवाना।
* महिला व पुरूषों को ध्यान में रखते हुए सर्विसेस व गतिविधिया करना।
* PMO/CMHO व ICTC प्रभारी, परामर्शकर्ता, एल.टी. के साथ नेटवर्क बनाना।
* प्रवासियों की सुगमता के लिए उनके अपने क्षेत्र में 50 कंडोम आउटलेट्स बनाये गये है।
* प्रवासियों को सरकारी व गैर सरकारी योजनाओं की जानकारी देना व समझ बनाना।
* एडवोकेसी / क्राईसेस के माध्यम से प्रवासी को सर्विसेज की समझ बनाना व साथ ही माईग्रेंट को समस्या आने पर उसको समझाना।

HIV / AIDS **की सामान्य जानकारी :–**

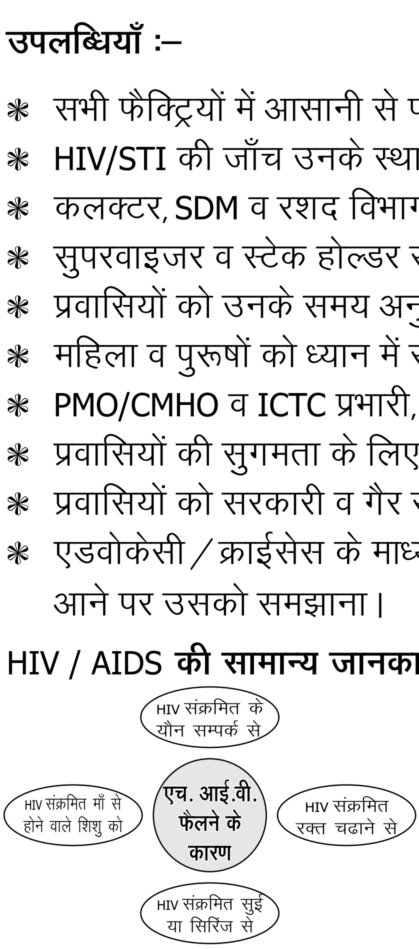

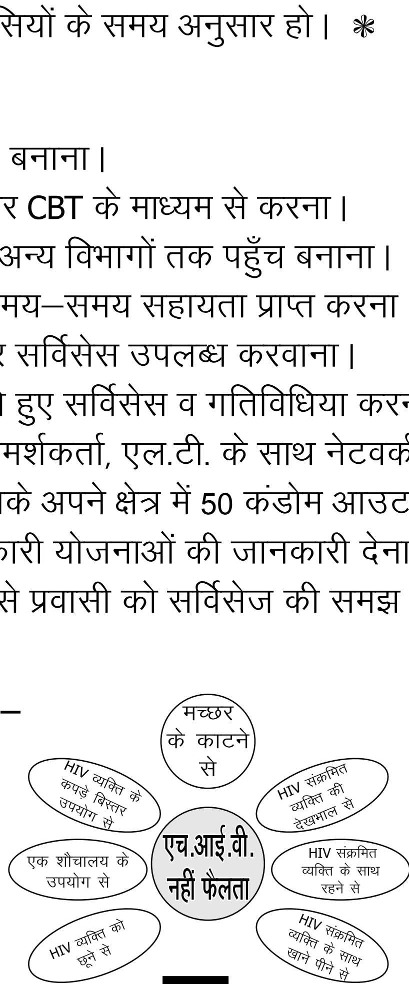

ग्रामीण महिला विकास संस्थान द्वारा अब तक 56361 लोगों को रजिस्टर किया गया है। इस वर्ष किये गये कार्यों में मुख्यतः निम्न हैं।

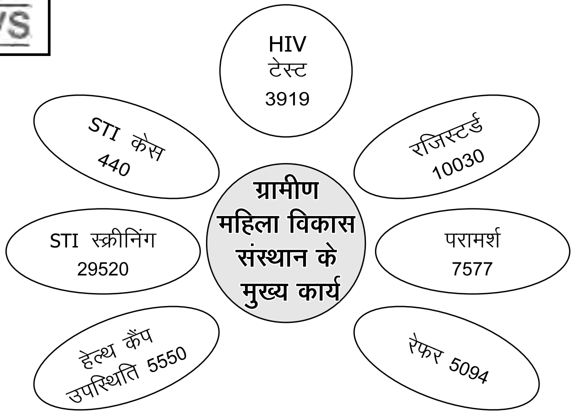

कोरोना की सामान्य जानकारी है :– कोरोना वैश्विक महामारी है। जिसके कारण देश में भारी नुकसान हुआ है। इस महामारी के कारण देश में लॉक डाउन हुआ। जिसके कारण प्रवासियों को बहुत सारी परेशानियों का सामना करना पड़ा है। इस समय में जहाँ रोजमर्रा कमाई करने वाले लोग थे, उनका सारा काम धंधा ठप हो चूका था, न वो वापस घर जा सकते थे न वो कोई कही पर काम कर सकते थे।

ऐसी विकट परिस्थिति में पास में पैसा नहीं, खाने को अन्न नहीं, उस परिस्थिति में संस्थान ने इन प्रवासियों के लिए पूरे लॉक डाउन में फ्री खाने की व्यवस्था की जिसमें खाने के पैकेट व सुखा राशन, फल, सब्जियाँ, साबुन, सेनीटाईजर, मास्क वितरित किया। साथ ही माईग्रेंट को उनके अनुसार ही सुविधाएँ उपलब्ध करवायी गयी। बहुत सारे लोगों को घर जाने के लिए साधन व रहने के लिए सुविधा उपलब्ध करवाई जा चुकी है। **21 मार्च 2020 को पूरे देश में लॉक डाउन कर दिया गया था।**

कोरोना के लक्षण — खांसी / जुकाम — सांस में परेशानी — सर दर्द, बुखार — गलें में खराश — घुटन

कोरोना से बचाव

- सामाजिक दूरी
- भीड़ भाड़ में न जायें
- मुहँ पर मास्क
- साबुन / सेनिटाईजर
- बार बार हाथ धोये
- विटामिन सी का उपयोग

ग्रामीण महिला विकास संस्थान चित्तौड़गढ़ टी.आई. के माध्यम से अनेक गतिविधियां की गयी। इसमें उपरोक्त सभी गतिविधियों के साथ विश्व एड्स दिवस पर 7 दिवसीय कार्यक्रम किया गया। जिसमें अलग–अलग साईट पर कार्य किये गये। जैसे :– जागरूकता, हेल्थ कैंप करना, कैंडल मार्च, प्रवासियों को हस्ताक्षर सिखाना, HIV परामर्श व जाँच करना इन कार्यक्रम में इंडस्ट्री के MO, CSR / HR प्रवासी लोगों को सम्मिलित किया गया। जिससें सभी लोगों में जागरूकता आयेगी।

आभार :–

संस्थान में विधायक श्रीमान् चन्द्रभान सिंह आक्या, पूर्व यू.आई.टी. चेयरमैन श्रीमान् सुरेश झंवर का निरंतर सहयोग रहता है। श्रीमान् चेतन देवड़ा (कलेक्टर सा.), श्रीमान् शांतिलाल सुथार (पी.ए. कलेक्टर सा.), श्रीमान् मुकेश कलाल (अतिरिक्त जिला कलक्टर सा.), श्रीमती बीजल सुराणा (रशद अधिकारी), श्रीमान् हितेश जोशी (राशि विभाग), श्रीमान् हिम्मतसिंह (एसपी. ऑफिस बाबु), डॉ अनीश जैन (आर्ट), डॉ राकेश भटनागर (नोडल ऑफिसर), डॉ लेक्षा (एम.ओ. ऑफ आर्ट), श्रीमान् समरेश सेन गुप्ता, टीएसयू निदेशक, टीम लीडर उमेश सर, भंवरलाल सर, महेंद्र सर, जीतेन्द्र सर, RSACS निदेशक डॉ आर.पी. डोरिया सर, RSACS टीम सुनील सर, सतवीर लाम्बा सर, ग्रामीण महिला विकास संस्थान के श्रीमान् शंकर सिंह रावत प्रोजेक्ट डायरेक्टर, फील्ड ऑफिसर नरेन्द्र गर्ग, कालूसिंह, रमेश जी, छोटू (जी.एम.वी.एस. टीम सदस्य) इन सभी के साथ उन समस्त लोगों का आभार जिन्होंने टी.आई. परियोजना व लॉक डाउन में किसी भी तरह का सहयोग किया।

GMVS

हंस मोबाईल मेडिकल सर्विसेज कार्यक्रम, बूबानी–अजमेर
Hans Mobile Medical Services Program, Bubani-Ajmer

द् हंस फाउण्डेशन, नई दिल्ली के वित्तिय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान द्वारा हंस फाउण्डेशन मेडिकल सविर्सेज कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है जिसके अन्तर्गत यह सर्व विदित है कि स्वास्थ्य सिर्फ बीमारियों की अनुपस्थिति ही नहीं है बल्कि एक पूर्ण शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्वस्थता है। स्वस्थ लोग रोजमर्रा की गतिविधियों से निपटने के लिए किसी भी परिवेश के मुताबिक अपना अनुकूलन करने में सक्षम होते है। कहा गया है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। कोई आदमी तभी अपने जीवन का पूरा आनन्द उठा सकता है जब वह शारीरिक तथा मानसिक रुप से स्वस्थ रहे। अगर हम अपने शरीर का ध्यान रखेंगे, संतुलित आहार, नियमित व्यायाम करेंगे तो स्वस्थ रहेंगे। नशे से दूर रहेंगे। स्वस्थ व्यक्ति ही आनंदमय जीवन व्यतीत कर सकता है।

ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी, अजमेर द्वारा इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर स्वास्थ्य को मुख्य उद्देश्य के रूप में चुना गया है। ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी, अजमेर के द्वारा समय–समय पर स्वास्थ्य सम्बन्धित विभिन्न मुद्दों पर कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है और ज्यादा से ज्यादा लोगों को इनके कार्यक्रमों से जोड़कर लाभ पहुँचाया जाता है।

कार्यक्रम की शुरुआत :–

संस्थान द्वारा अजमेर जिले के दूर–दराज स्थित गाँवों में स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधाओं की एक रिर्पोट प्रोजेक्ट रुप में द् हंस फाउण्डेशन–नई दिल्ली को सौंपी गई। द् हंस फाउण्डेशन–नई दिल्ली के मूल्याकंन के द्वारा 13 मई, 2014 को संस्थान द्वारा श्रीनगर के 12 गाँवों में इस कार्यक्रम की शुरूआत की गयी। कार्यक्रम के द्वारा एक वित्तिय वर्ष में 12 गांवो में स्वास्थ्य सेवायें प्रदान की जाती है। शुरूआत में परियोजना का मूल्यांकन दांता गाँव में था लेकिन उसके पश्चात् वर्तमान में बूबानी में स्थित है। जहाँ पर कार्यक्षेत्र से रेफर मरीजों का उपचार भी किया जाता है। यह परियोजना मई, 2014 से वर्तमान में लगातार जारी है और समय–समय पर कार्यक्षेत्र में बदलाव किया जाता है। नये गाँव को कार्यक्षेत्र से जोड़ा जाता है और कम से कम 3 वर्ष तक सेवायें प्रदान की जाती है। इन वर्षों में लक्ष्य की प्राप्ति कर नये गाँवों का चुनाव किया जाता है। इस वर्ष टीम के द्वारा गुवारड़ी, शाला की ढाणी, कालेडी, आखरी, गुदली, हाथीपट्टा, मानपुरा, नारगाल, लीरी का बाडिया, टण्टिया, मोहनपुरा तथा सराणा आदि 12 गांवों में स्वास्थ्य सेवायें प्रदान की गयी। माह में दो बार स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इस सफलता से प्रेरित होकर इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए इस वर्ष 2020–21 में 20 गाँवों में स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रदान की जाएगी। एक माह में दो बार तथा प्रत्येक दिन दो गाँवो में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया जाएगा। 2020–21 में लाभान्वित होने वाले गाँवों की सूची अधोलिखित है – खोड़ा गणेश, दांता, धामेडी, देवमण्ढ़ की ढाणी, निम्बुकिया, टिढाणा, नौलखा, भवानीखेड़ा, मानपुरा, रामपुरा, मोहनपुरा, कानाखेड़ी, बड़ल्या, नेडल्या, बड़ी होकरा, छोटी होकरा, गोवलिया, झोपड़ा, नाडी का दढ्डा, बनियातों की ढाणी।

कार्यक्रम के तहत एक एम्बूलेंस है जो चिकित्सा से सम्बन्धित विभिन्न उपकरणों से युक्त है। यह एक

छोटा चलता–फिरता अस्पताल है। टीम के द्वारा सुबह 9.00 से 4.00 बजे तक 12 गाँवों में स्वास्थ्य शिविर लगाया जाता है। इसके बाद 4.00 से 5.00 बजे तक बुबानी (स्टेशनरी हेल्थ सेन्टर) पर मरीजों का उपचार किया जाता है। स्वास्थ्य शिविर में पूरी टीम उपस्थित रहती है।

कार्यक्रम के उद्देश्य :–

- ❋ परिवार में महिलाओं तथा बच्चों की स्वास्थ्य स्थिति में सुधार लाना।
- ❋ परिवार व समाज में महिलाओं के स्वास्थ्य की महत्ता पर जोर देना।
- ❋ महिलाओं तथा बच्चों को स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवायें उपलब्ध कराना।
- ❋ प्रत्येक गर्भवती एवं धात्री महिला तक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवाओं की पहुँच बनाना।
- ❋ सभी बच्चों में प्राईमरी टीकाकरण को प्रेरित करना जिससे की बच्चों की मृत्युदर को कम किया जा सकें।
- ❋ महिलाओं को प्रसव पूर्व, सुरक्षित प्रसव तथा प्रसव पश्चात् देखभाल को समझाकर स्वस्थ रहने के लिये प्रेरित करना।
- ❋ महिलाओं को संस्थागत प्रसवों के तहत मिलने वाले लाभ जैसे :– 104 व 108 सेवायें, जननी मातृ व शिशु योजना, मुख्यमंत्री राज श्री योजना के लाभों की जानकारी देना।
- ❋ नियमित जाँच, देखभाल, उपचार, संतुलित आहार, टीकाकरण तथा संस्थागत प्रसव आदि के द्वारा मातृ मृत्युदर व शिशु मृत्युदर को कम करना। ❋ समुदाय को बालिका बचाने हेतु जागरूक करना।
- ❋ वंचित वर्ग तक स्वास्थ्य व चिकित्सा सुविधाओं को पहुँचाना।
- ❋ पर्यावरण प्रदूषण को कम करने पर जोर देना तथा स्वास्थ्य में सकारात्मक बदलाव हेतु बनाना।
- ❋ जागरूकता बैठकों का आयोजन कर विभिन्न स्वास्थ्य संबंधित मुद्दों जैसे–स्वच्छता, पोषाहार, मानसिक स्वास्थ्य परामर्श, आँखों की देखभाल, स्वच्छ वातावरण, मादक द्रव्यों के सेवन को कम करने हेतु परामर्श तथा विभिन्न बिमारी जैसे–डेंगु, चिकनगुनिया, मलेरिया, अस्थमा, कैंसर, कुपोषण, मोटापा, एच.आई.वी. /एड्स, एनीमिया, कमजोरी आदि के प्रति जागरूकता लाना।
- ❋ विभिन्न बिमारियों की जाँच व उपचार के साथ–साथ ग्रामवासियों को बिमारियों के कारण, लक्षण, उपचार तथा रोकथाम के प्रति जागरूक करना।
- ❋ स्वास्थ्य आवश्यकताओं तथा उनके हक के प्रति जागरूक कर उचित कदम उठाने के लिए प्रेरित करना।
- ❋ बालिका जीवितता एवं सुरक्षित मातृत्व से जुड़े मुद्दें पोषाहार एवं स्वास्थ्य के बारे में महिला, परिवार तथा समाज में जागरूकता को बढ़ावा देना।
- ❋ विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी बैठकों के माध्यम से समय–समय पर देना तथा योजनाओं से उचित लाभार्थियों को जोड़कर लाभ पहुँचाना। ❋ महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने हेतु जागरूक करना।
- ❋ सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं से ग्रामीण समुदाय के लोगों को प्रेरित करना।
- ❋ बेटी बचाओ बेटी पढाओ के लिए ग्रामीण समुदाय के लोगो को प्रेरित करना।
- ❋ जनसंख्या नियंत्रण व स्वास्थ्य की दृष्टि से महिलाओं को बच्चों के बीच कम से कम तीन से पाँच वर्ष का अंतर रखने के लिए प्रेरित करना।

* ग्रामीणों को कोरोना के बारे में बताना जैसे की इसके क्या लक्षण है, इसके बचाव के उपाय व कैसे इस बीमारी के रहते अपना ध्यान रखा जाना चाहिए।

स्वास्थ्य शिविर में विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य सुविधाएँ :–

कार्यक्रम के द्वारा स्वास्थ्य शिविर में विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य सुविधाएँ जैसे– चिकित्सा जाँच, दवाइयाँ, काउन्सिलिंग, गर्भवती महिला जाँच, स्वास्थ्य जाँच, महिला तथा शिशु स्वास्थ्य जाँच, देखभाल व घर भ्रमण पर मरीजों का स्वास्थ्य जाँच, रेफर आदि के अलावा स्वास्थ्य सम्बन्धित विभिन्न मुद्दों पर जागरूकता बैठकों का आयोजन किया जाता है। टीम के द्वारा महिलाओं, किशोर–किशोरी तथा कार्यक्रम के तहत निर्मित ग्राम स्वास्थ्य कमेटी के सदस्यों के साथ जागरूकता बैठकों का आयोजन किया जाता है। कार्यक्रम के तहत 12 गाँवों में कार्य किया जा रहा है। जिसमें प्रत्येक गाँव में 1 स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता को नियुक्त किया गया है। स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता के द्वारा गांव में भ्रमण किया जाता है जिसमें उसके कई कार्य होते है। जैसे :– गर्भवती तथा धात्री महिला की नियमित देखभाल, टीकाकरण, बच्चों का टीकाकरण, पोषाहार, मरीजों का फोलोअप टीकाकरण दिवस पर गाँव की आँगनबाड़ी पर पहुँच तथा टीकाकरण में सहयोग, गाँव में स्वास्थ्य संबंधित मुद्दों पर चर्चा एवं जागरूकता, परिवार नियोजन के साधनों के प्रति जागरूकता तथा उपयोग पर जोर, मरीजो की रेफर समस्याओं पर चर्चा तथा निवारण विभिन्न बीमारियों की जानकारी, सरकारी योजनाओं की जानकारी देना तथा निवारण, विभिन्न बीमारियों की जानकारी, सरकारी योजनाओं की जानकारी देना तथा सरकारी योजनाओं से जोड़कर लाभ पहुँचाना आदि।

स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता द्वारा समय–समय पर घर भ्रमण कर स्वास्थ्य के बारे में उचित जानकारी प्रदान की जाती है। महिलाओं को उचित मार्गदर्शन भी प्रदान किया जाता है तथा महिलाओं की समय–समय पर घर भ्रमण कर देखभाल की जाती है। कार्यक्रम के बेहतर कार्यान्वयन तथा उद्देश्य की सफलतापूर्वक प्राप्ति हेतु प्रत्येक गांव में गांव स्तर पर एक ग्राम स्वास्थ्य कमेटी का गठन किया गया है। गाँव के महिला व पुरूष ही इस कमेटी के सदस्य है। गाँव स्तर की समस्याओं पर चर्चा तथा निवारण करने हेतु प्रत्येक माह में एक बार जागरूकता बैठक का आयोजन किया जाता है तथा नवीनतम जानकारी प्रदान की जाती है।

संस्था ने वर्ष 2020 में आयी महामारी कोविड–19 से बचाव के लिए घर–घर जाकर लोगों को जागरूक किया और साथ ही जरूतमंद लोगों को आवश्यक सामग्री का वितरण किया जैसेः– मास्क, खाद्य सामग्री, सेनेटाईजर, सेनेटरी नेपकीन आदि। संस्था के कार्यकत्ताओं द्वारा उन्हें सामाजिक दूरी रखने, मास्क लगाने, बार–बार हाथ धोने तथा बिना कारण घर से बाहर निकलने के लिए प्रेरित किया।

क्र.सं.	वितरित सामग्री का नाम	लाभान्वित व्यक्तियों की संख्या
1	मास्क	6000
2	खाद्य सामग्री (आटा, दाल, चावल, मसाले इत्यादि)	1500 परिवार
3	सेनेटरी नेपकीन	800
4	सेनेटाईजर	500

गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ :–

निःशुल्क स्वास्थ्य सेवायें :– कार्यक्रम के तहत स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधायें अजमेर जिले की श्रीनगर पंचायत समिति के 12 गाँवों में प्रदान की जा रही है। कार्यक्रम के तहत मुख्य ध्यान महिलाओं तथा बच्चों पर केन्द्रित किया जाता है। प्रत्येक गाँव में एक स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता नियुक्त किया गया है जो टीम के गाँव में पहुँचने से पहले ही सूचना कर देता है। टीम गाँव में पहुँचकर स्वास्थ्य शिविर का आयोजन करती है तथा निःशुल्क स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवाएँ प्रदान करती है। इसके साथ ही जागरूकता बैठकों का आयोजन भी किया जाता है। एम्बुलेंस टीम के साथ गाँव में पहुँचकर हॉर्न बजाती है और ग्रामवासियों को सूचना मिल जाती है। स्वास्थ्य टीम द्वारा गृह भ्रमण कर धात्री महिलाओं तथा नवजात शिशु की स्वास्थ्य जाँच, देखभाल, स्तनपान का तरीका व टीकाकरण हेतु प्रेरित, टाँको की देखभाल, जन्म प्रमाण पत्र, स्वच्छता, उपचार आदि सेवायें प्रदान की जाती है। परियोजना के तहत इस वर्ष 15849 मरिजों को निःशुल्क स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवायें प्रदान की गई।

क्र.सं.	वर्ष	महिला	पुरूष	बच्चे	कुल
1	2014—15	9148	5789	2443	17380
2	2015—16	12563	1817	4182	18562
3	2016—17	11543	2179	3853	17575
4	2017—18	11879	1259	3598	16736
5	2018—19	11823	1338	3681	16842
6	2019—20	10912	3144	1793	15849
	कुल	**67868**	**15526**	**19550**	**102944**

इससे महिलाओं और बच्चों से सम्बन्धित सभी प्रकार की बिमारियों का उपचार किया जाता है। कई बार उपचार से आराम नहीं मिलने पर या गंभीर परिस्थितियाँ होने पर या जाँच हेतु मरीजों को किशनगढ़, श्रीनगर तथा अजमेर के अस्पतालों में रेफर भी किया जाता है।

कार्यक्रम के स्टेशनरी हेल्थ सेन्टर—बूबानी में स्थापित है जहाँ से कार्यक्रम का संचालन किया जाता है बूबानी से प्रातः 9.00 बजे एम्बूलेंस गाँव में स्वास्थ्य शिविर लगाने के लिये रवाना होती है। 9.00 बजे से सायं 4.00 बजे तक गाँवों में स्वास्थ्य शिविर लगाया जाता है सायं 4.00 बजे तक बूबानी में स्वास्थ्य टीम पहुँचती है और 5.0 बजे तक स्टेशनरी हेल्थ सेन्टर बूबानी पर स्वास्थ्य सेवायें प्रदान की जाती है।

टीम के द्वारा प्रत्येक मरीज का पूरा रिकॉर्ड **OPD** रजिस्टर में रखा जाता है। उसी रिकॉर्ड के आधार पर मासिक रिर्पोट अलग से रखा जाता है। उनकी प्रत्येक विजिट में वजन, बी.पी. जाँच, सोनोग्राफी आदि की जाँच की जाती है। प्रत्येक विजिट में संस्थागत प्रसव के लिए प्रेरित किया जाता है। 104 व 108 की सुविधाओं की जानकारियाँ दी जाती है। बच्चा होने पर टीम द्वारा धात्री महिला के घर **PNC** विजिट की जाती है। महिला को स्वयं तथा अपने बच्चे की देखभाल की प्रक्रिया तथा सावधानियों के प्रति जागरूक किया जाता है। बच्चे को नहलाना, मालिश करना, स्तनपान से लेकर सम्पूर्ण टीकाकरण के लिए प्रेरित किया जाता हैं। माँ को स्वयं के आहार के प्रति जागरूक किया जाता है।

परियोजना के स्वास्थ्य शिविर में डॉक्टर मरीजों की स्वास्थ्य जाँच कर उपचार लिखा जाता है।

मेल–नर्स तथा फिमेल नर्स द्वारा दवा दी जाती है और दवा खाने का तरीका भी बताया जाता है। मरीजों की बीमारी के अनुसार ही दवा दी जाती है और उपचार चलाने के लिए जागरूक किया जाता है। मरीजों को 3–15 दिन का उपचार दिया जाता है। बी.पी., अस्थमा जैसी बिमारियों का ईलाज लगातार चलता है। उन्हें 15 दिन का उपचार दिया जाता है। परियोजना टीम द्वारा लगातार गाँव में भ्रमण कर ग्रामवासियों से सम्पर्क किया जाता है। गाँव में महिलायें गर्भवती होने पर टीम के पास जाँच हेतु आती है और पॉजीटीव होने पर लगातार उपचार दिलवाया जाता है। उनके वजन, बी.पी., दैनिक दिनचर्या, कामकाज, खून की जाँच, दिन के समय आराम, टीकाकरण, सोनोग्राफी, स्वयं की पहचान संबंधित दस्तावेजों का कार्य पूर्ण तथा आँगनबाड़ी केन्द्र पर लगातार सम्पर्क आदि की पूर्ण जानकारी दी जाती है तथा टीम द्वारा रिकॉर्ड भी रखा जाता है। समय–समय पर संस्थागत प्रसव व प्रसव के बाद माँ का पहला दूध जिसे खीस कहा जाता है के लिये प्रेरित किया जाता है। गर्भवती महिलायें स्वास्थ्य शिविर में पहुँचकर नियमित जाँचों का मूल्याकंन तथा दवाईयाँ प्राप्त करती है। इसके साथ सरकारी संस्थानों पर लगातार सम्पर्क बनाये रखने के लिये प्रेरित भी किया जाता है। गर्भवती महिलायें पूर्ण गर्भावस्था के दौरान टीम से जुड़ी रहती है और उपचार प्राप्त करती है।

गर्भवती एवं धात्री महिला जाँच :– कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य गाँव स्तर की महिलाओं को स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रदान करना है। विशेषतः प्रत्येक गर्भवती महिला को स्वास्थ्य लाभ पहुँचाना है तथा मातृ मृत्युदर को कम करना है। महिलाओं में गर्भवती तथा धात्री महिलाओं पर ध्यान केन्द्रित करना है। टीम वर्तमान के कार्यक्षेत्र में पिछले 03 वर्षों से कार्य कर रही है। इन वर्षों में प्रत्येक गाँववासी को कार्यक्रम की सुविधाओं की जानकारी है। स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता की भी गाँव में अच्छी पहचान बन चुकी है। गाँव में अगर किसी महिला को कोई तकलीफ होती है तो वह स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता से तुरन्त सम्पर्क करती है तथा जाँच करवाकर उपचार शुरू करती है। महिला को गर्भ से होने का अंदेशा होने पर स्वास्थ्य टीम या आँगनबाड़ी केन्द्र पर जाँच करवा कर पुष्टी कर लेती है। गर्भवती महिला के प्रथम बार स्वास्थ्य शिविर में पहुँचने पर उसका रजिस्ट्रेशन किया जाता है। उसके बाद लगातार शिविर में पहुँचकर स्वास्थ्य जाँच करवाने के लिए प्रेरित किया जाता है। टीम द्वारा गर्भवती महिला की प्रत्येक विजिट का अलग–अलग रिकॉर्ड रखा जाता है। इसके साथ ही स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता द्वारा स्वास्थ्य शिविर के बाद लगातार गृह भ्रमण कर स्वास्थ्य स्थिति की जानकारी प्राप्त की जाती है। इसके साथ उसकी काउन्सिलिंग की जाती है जिसमें पोषाहार, स्वच्छता, दैनिक दिनचर्या, आराम, जननी सुरक्षा योजना तथा खून की जाँच आदि के लिए प्रेरित किया जाता है। इसके साथ ही संस्थागत प्रसव, टीकाकरण, माँ का पहला दूध आदि बिन्दुओं पर भी चर्चा की जाती है। परियोजना के द्वारा इस वर्ष में 215 गर्भवती महिलाओं का पंजीकरण कर कार्यक्रम की सुविधाएँ प्रदान की गयी। पंजीकृत गर्भवती महिलाओं को बच्चा होने तक स्वास्थ्य जाँच एवं उपचार की सुविधा प्रदान की गई है। टीम द्वारा 215 पंजीकृत महिलाओं को 2398 बार स्वास्थ्य जाँच एवं उपचार दिया गया। प्रत्येक विजिट पर उन्हें लगातार वजन बढ़ाने, पोषाहार, स्वच्छता, आराम, संस्थागत प्रसव तथा माँ का पहला दुध पिलाने के लिये जागरूक किया जाता है। साथ ही बेटा–बेटी में अन्तर न करके बेटी को भी समान अवसर प्रदान करने के लिये प्रेरित किया जाता है। बेटी को भी उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर देना चाहिये। उसे ही बेटा समझना चाहिए।

प्रसव होने पर टीम द्वारा महिला के घर मातृ एवं शिशु देखभाल हेतु भ्रमण किया जाता है। बच्चे एवं माँ को बच्चे के सम्पूर्ण टीकाकरण, स्तनपान, स्वच्छता, पोषाहार, जन्म प्रमाण पत्र के साथ विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी दी जाती हैं। इस वर्ष में टीम द्वारा 228 धात्री महिलाओं का उपचार एवं परामर्श एवं स्वास्थ्य देखभाल की गयी। विभिन्न जागरूकता बैठकों तथा रैलीयों के माध्यम से गाँवों की महिलाओं को ग्राम स्तर पर जागरूक किया जाता है और स्वास्थ्य देखभाल हेतु प्रेरित किया जाता है।

टीकाकरण :– स्वास्थ्य टीम गाँव में स्वास्थ्य सेवाएँ तथा चिकित्सा सेवाएँ प्रदान करती है। गर्भावस्था तथा बच्चों का सम्पूर्ण टीकाकरण भी बच्चों के बेहत्तर तथा सुरक्षित भविष्य के लिये आवश्यक है। यह टीकाकरण बच्चों को सात बिमारियाँ जैसे :– क्षय रोग, डिप्थीरिया, काली खाँसी, खसरा, टिटनेस, हेपेटाइटिस बी तथा चिकन पॉक्स आदि से बचाते है। इसके साथ ही बच्चों को पोलिया की दवा भी पिलाई जाती है। यह सब टीकाकरण सरकार द्वारा स्वास्थ्य विभाग के अर्न्तगत संचालित ग्राम स्तर पर आँगन बाड़ी केन्द्रों पर निःशुल्क किया जाता हैं। आँगनबाड़ी केन्द्र पर कार्यरत आशा सहयोगिनी तथा टीम का स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता टीकाकरण से पूर्व ग्रामवासियों को सूचना प्रदान करता है। टीकाकरण के दिन आँगनबाड़ी केन्द्र पर टीकाकरण में सहयोग किया जाता है। टीकाकरण के दिन गर्भवती महिलाओं तथा बच्चों को टीके लगाये जाते है। जिसका रिकॉर्ड स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता तथा आँगनबाड़ी कार्यकर्त्ता द्वारा रखा जाता है। इस अवसर पर महिलाओं को एकत्रित कर जागरूकता बैठक का आयोजन कर महिलाओं को टीकाकरण की महत्ता तथा उपयोगिता बतायी जाती है तथा सम्पूर्ण टीकाकरण हेतु प्रेरित किया जाता है। इस वर्ष में टीम के सहयोग से कार्यक्रम के 12 गाँवों में आँगनबाड़ी केन्द्रो पर टीकाकरण किया गया जिसकी रिपोर्ट है–146 बी.सी.जी., 194 पेन्टा प्रथम, 188 पेन्टा द्वितीय, 215 पेन्टा तृतीय, 209 IPV, 206 खसरा, 206 डी.पी.टी. बूस्टर प्रथम, 58 डी.पी.टी बूस्टर द्वितीय, 710 रूबेला तथा गर्भवती को 262 टीटी लगाये गये। टीम द्वारा प्रत्येक गाँव से प्रत्येक माह में रिकार्ड प्राप्त किये जाते है और मासिक रिकार्ड में दर्ज कर संस्थान तथा टी.एच.एफ. को प्रदान किये जाते है।

टीम द्वारा उन महिलाओं के घर भ्रमण कर टीकाकरण हेतु प्रेरित किया जाता है, जो टीके नहीं लगवाते हैं, उन्हें टीकाकरण हेतु प्रेरित कर टीकाकरण करवाया जाता है। टीम द्वारा नवम्बर माह में विश्व टीकाकरण दिवस भी मनाया गया। दिवस पर जागरूकता बैठकों तथा रैली का आयोजन किया गया। इन बैठकों तथा रैलियों के माध्यम से ग्रामवासियों को सम्पूर्ण टीकाकरण करवाया जाता है। टीकाकरण करवाने हेतु काउन्सलिंग भी की जाती हैं। महिलाओं को टीकाकरण चार्ट समझाया जाता हैं। टीम के सहयोग से इस वर्ष में कुल 2132 बच्चों का टीकाकरण करवाया गया।

मातृ मृत्यु दर एवं शिशु मृत्यु दर :– कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है गर्भवती महिलाओं को जागरूक कर नियमित जाँच एवं उपचार के माध्यम से संस्थागत प्रसव के फायदें बताये जाते है माँ तथा शिशु को सुरक्षित वातावरण मिलता है। कार्यक्रम के विभिन्न आयाम है जिसका उद्देश्य ग्रामवासियों को उनके उद्देश्य के प्रति जागरूक करना ही विशेषतः महिला स्वास्थ्य का मुद्दा है। टीम द्वारा जागरूकता बैठको के माध्यम से स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की जाती है। महिलाओं को वर्तमान के परिपेक्ष में छोटा परिवार–सुखी परिवार के लिये प्रेरित किया जाता है गर्भावस्था के दौरान पोषाहार, दैनिक दिनचर्या, दिन के समय आराम, नियमित जाँच

वजन, बी.पी., खून की जाँच, टीकाकरण, सोनोग्राफी के साथ–साथ लगातार उपचार की सलाह दी गयी ताकि मातृ मृत्यु दर को कम किया जा सकें। शिशु मृत्यु दर को कम करने के लिये जागरूकता बैठकों में स्तनपान का तरीका, स्वच्छता, माँ का पहला दुध आदि के प्रति गर्भावस्था में जागरूक किया जाता हैं तथा उसके बाद पी.एन.सी. विजिट पर भी प्रेरित किया जाता है ताकि शिशु मृत्यु दर को कम किया जा सकें। टीम द्वारा 12 गाँवों में स्वास्थ्य शिविर का आयोजिन किया जाता है। वर्षभर में कार्यक्षेत्र के 12 गाँवों में एक भी मातृ मृत्यु नहीं हुई। जबकि पिछले 1 मात्र मृत्यु हुई थी। वर्षभर में 228 बच्चों का जन्म हुआ जिसमें से 1 बच्चें की मृत्यु हुई है। जो पिछले वर्ष की मृत्यु दर से काफी कम है। टीम द्वारा समय–समय पर विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की जाती है और जागरूकता बैठकों, रैलियों तथा काउन्सिलिंग द्वारा लगातार जागरूक किया गया।

संस्थागत प्रसव :– कार्यक्रम का उद्देश्य ही गर्भवती महिलाओं का नियमित उपचार कर संस्थागत प्रसव करवाना है | जागरूकता बैठकों का आयोजन कर महिलाओं को संस्थागत प्रसव, जननी सुरक्षा योजना, 104 व 108 की सुविधाओं आदि के साथ–साथ संस्थागत प्रसव में माँ व बच्चें की सुरक्षा तथा उपयोगिता के प्रति सचेत किया। सरकारी अस्पताल में प्रसव कराने पर मिलने वाले लाभ की जानकारी स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता द्वारा गृह भ्रमण कर परिवारों को दी गई। महिला के साथ–साथ परिवार को भी संस्थागत प्रसव हेतु प्रोत्साहित किया गया। कार्यक्रम के 12 गाँवों में इस वर्ष के दौरान 188 प्रसव सरकारी अस्पताल में हुये। 39 प्रसव निजी अस्पताल में तथा 01 प्रसव घर पर हुआ। इस वर्ष भर में कुल 228 प्रसव हुये।

जागरूकता :– कार्यक्रम में स्वास्थ्य शिविर तथा जागरूकता का नियमित रुप से आयोजन किया जाता है। टीम के द्वारा महिलाओं, किशोर–किशोरी तथा ग्राम स्वास्थ्य कमेटी के सदस्यों के साथ जागरूकता बैठकों तथा रैलियों का आयोजन किया जाता है। इन जागरूकता बैठकों तथा रैलियों में स्वास्थ्य सम्बन्धित विभिन्न मुद्दों, विभिन्न बिमारियों पर चर्चा की जाती है तथा जागरूक किया जाता है। इसके साथ ही माह में एक बार एक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय दिवस भी मनाया जाता है। इस तरह वर्ष भर में 12 राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय दिवसों का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष टीम द्वारा महिलाओं की 12 जागरूकता बैठकों का आयोजन किया गया जिसमें 3291 महिलाओं को जागरूक किया गया। किशोर–किशोरी के साथ 9 जागरूकता बैठकों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के पिछले वर्ष तक किशोरी जागरूकता बैठकों का आयोजन किया जाता था लेकिन इस वर्ष से किशोर–किशोरी जागरूकता बैठकों का आयोजन किया गया। इन जागरूकता बैठकों में किशोर–किशोरी के स्वास्थ्य स्थिति, शारीरिक बदलाव, देखभाल व सावधानियाँ आदि पर भी चर्चा की गयी तथा छेड़छाड़ के प्रति सचेत किया गया। कार्यक्रम में ग्रामवासियों का उच्च स्तर पर सहयोग प्राप्त करने के उद्देश्य से प्रत्येक गाँव में ग्राम स्तर पर एक ग्राम स्वास्थ्य कमेटी का गठन किया गया है। इनके साथ भी माह में एक बार जागरूकता बैठक का आयोजन कर विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की जाती है। ग्राम स्वास्थ्य कमेटी की 12 जागरूकता बैठकों के द्वारा 1940 सदस्यों को जागरूक किया गया। समय–समय पर जागरूकता बैठकों के साथ–साथ रैलियों का आयोजन भी किया जाता है।

परिवार नियोजन :– कार्यक्रम के द्वारा स्वास्थ्य और सेवाओं के अलावा जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इन जागरूकता कार्यक्रमों में स्वास्थ्य सम्बन्धित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की जाती है। टीम के

द्वारा परिवार नियोजन की भी जागरूकता बैठकों में चर्चा की जाती है महिलाओं तथा उनके परिवार को छोटे परिवार का महत्व समझाया जाता है। आजकल के महंगाई के जमाने में बच्चों को उच्चतर शिक्षा, सक्षम बनाना तथा सशक्त करना बहुत मुश्किल है। बिना किसी कामयाबी के आने वाले समय में जीवन जीना और भी मुश्किल हो जायेगा। जमीने कम पड़ जायेगी खाने–पीने की चीज कम पड़ेगी इन बिन्दुओं पर चर्चा कर परिवार नियोजन के साधन जैसे–कण्डोम, गर्भ निरोधक गोलियाँ, महिला नसबंदी, पुरुष नसबंदी, कोपरटी, इंजेक्शन इत्यादि की विस्तृत जानकारी दी गई तथा उपयोग में लेने के लिए प्रेरित किया गया।

टीम स्वयं परिवार नियोजन साधनों को महिलाओं को नहीं देती है जबकि स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता द्वारा महिलाओं को प्रोत्साहित कर आँगनबाड़ी केन्द्र तक पहुँचाने और वहाँ पर आशा सहयोगिनी की देखरेख में महिलाओं को उचित साधन दिया जाता है तथा जागरूक भी किया जाता है। इसके साथ ही नसबंदी के लिए भी प्रेरित किया जाता है। टीम के द्वारा आशा सहयोगिनी के सहयोग से 50 महिला नसबंदी करवाई गई। 08 महिलाओं के कॉपरटी रखवायी। 2475 महिलाओं ने कंडोम किया। 80 महिलाओं ने गर्भ निरोधक गोलियाँ तथा 37 महिलाओं ने सरकार द्वारा संचालित अंतरा इंजेक्शन लगवायें। इस प्रकार 2650 परिवार नियोजन साधनों का उपयोग इस वर्ष में किया गया।

रेफरल सेवायें :– कार्यक्रम के तहत स्वास्थ्य शिविर में स्वास्थ्य सेवाएँ निःशुल्क प्रदान की जाती है। स्वास्थ्य शिविर में सामान्यतः बीमारियों का ईलाज किया जाता है कई बार स्वास्थ्य सेवाओं का फायदा ना होने पर गंभीर समस्या होने पर तथा लेब जाँच हेतु मरीजों को सरकारी व गैर सरकारी अस्पताल में रेफर किया जाता है।

जाँच करवाकर पुनः स्वास्थ्य शिविर में चेकअप हेतु आने के लिए प्रेरित किया जाता है। स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा घर भ्रमण कर स्वास्थ्य जानकारी प्राप्त कि जाती है। टीम को वर्तमान स्थिति बताकर आवश्यक सलाह दी जाती है। इस वर्ष में टीम के द्वारा 199 मरीजों को रेफरल सुविधाएँ प्रदान की गई। आसपास के कार्यक्षेत्र में गर्भवती महिला की स्वास्थ्य स्थिति अचानक खराब होने पर उसे इस एम्बूलेंस के द्वारा सरकारी अस्पताल में भी पहुँचाया जाता है।

टी.एच.एफ. विजीट :– कार्यक्रम का संचालन द् हंस फाउण्डेशन नई दिल्ली के वित्तीय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी, अजमेर के द्वारा किया जा रहा है। कार्यक्रम का संचालन अजमेर जिले की श्रीनगर पंचायत समिति के 12 गाँव में किया जा रहा है। हर वर्ष द् हंस फाउण्डेशन नई दिल्ली के द्वारा कार्यक्रम की गतिविधियों का मूल्यांकन किया जाता है। इस वर्ष 27–28 दिसम्बर 2019 को द् हंस फाउण्डेशन–नई दिल्ली के चितवन चमाडिया द्वारा कार्यक्रम की गतिविधियों का मूल्यांकन किया जाता है। प्रथम दिवस में टी.एच.एफ. विजीटकर्ता का संस्थान के मुख्यालय–किशनगढ़ में स्वागत किया गया। परियोजना निदेशक शंकरसिंह रावत और परियोजना समन्वयक किरनजीत कौर द्वारा संस्थान की गतिविधियों व कार्यक्रम की सम्पूर्ण गतिविधियों की विस्तृत जानकारी पी.पी.टी. के द्वारा प्रदान की गयी। जिसके द्वारा कार्यक्रम संचालन को समझाया गया। उस दिन स्वास्थ्य शिविर गाँव मानपुरा में आयोजित किया गया।

टीम वहाँ पर विजीटर के पहले पहुँची तथा स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। पी.पी.टी. के बाद जी.एम.वी.एस. टीम व विजिटर गाँव में पहुँचे जहाँ पर टीम तथा गाँव की महिलाओं द्वारा सभी का स्वागत किया गया। चितवन मैम टीम से मिली तथा कार्यक्रम को फिल्ड लेवल पर समझा। कार्यक्रम के विभिन्न रिकॉर्ड जैसे–ओ.पी.डी. रजिस्टर, ए.एन.सी./पी.एन.सी. रजिस्टर, परिवार नियोजन रजिस्टर, टीकाकरण रजिस्टर तथा सॉफ्टवेयर में एन्ट्री आदि का मूल्यांकन किया। डॉ. अब्दुल मलिक से गाँव की बीमारियों को लेकर चर्चा की गयी महिलाओं के साथ बैठक की गयी। मैम द्वारा कार्यक्रम से सम्बन्धित स्वास्थ्य सम्बन्धित तथा परिवार नियोजन के साधन तथा माहवारी आदि पर चर्चा की गई। लंच के बाद गाँव शाला की ढाणी में विजीट की गयी। वहाँ पर स्वास्थ्य कार्यकर्ता कृष्णा कंवर द्वारा महिलाओं को एकत्रित किया गया और बैठक का आयोजन किया गया तथा महिलाओं के साथ जागरूकता सम्बन्धित मुद्दों पर चर्चा की गयी।

द्वितीय दिवस की सुबह संस्थान के राही ट्रकर्स आई हेल्थ प्रोग्राम की विजीट की गयी। कार्यक्रम की गतिविधियों की विस्तृत जानकारी प्रदान की गयी। इसके बाद स्वास्थ्य शिविर लीरी का बाडिया गाँव में विजीट की गयी टीम से बातचीत कर महिलाओं के साथ बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें मैम द्वारा महिलाओं से उनके स्वास्थ्य सम्बन्धित मुद्दों पर सवाल किये गये जिनका जवाब महिलाओं द्वारा दिया गया। मैम द्वारा धन्यवाद दिया गया। किशनगढ़ मुख्यालय पर अकाउंटस सम्बन्धित दस्तावेजों का मूल्यांकन किया गया। कार्यक्रम के भविष्य को लेकर योजनाओं पर चर्चा की गयी। विजीटर चितवन मैम द्वारा सभी को धन्यावाद दिया गया। तथा जी.एम.वी.एस. स्टाफ द्वारा कार्यक्रम का मूल्यांकन कर उचित मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए धन्यवाद किया गया।

शिव शिक्षा समिति :– कार्यक्रम का संचालन मई, 2014 से किया जा रहा तथा विभिन्न गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है। कार्यक्रम में बदलाव, बेहत्तर संचालन तथा नया सीखने के उद्देश्य से शिव शिक्षा समिति, रानौली (टोंक) में एक दिवसीय भ्रमण वर्ष 2019 को किया गया। जी.एम.वी.एस. टीम शिव शिक्षा समिति, रानौली में सुबह 10.00बजे पहुँचे जहाँ पर टीम का स्वागत किया गया। एस.एस.एस. संस्थान द्वारा भी परिचय दिया गया। कार्यक्रम की गतिविधियों पर चर्चा की गयी। संस्थान के मुख्यालय का अवलोकन किया गया। जिसमें विभिन्न पोस्टर तथा कार्यक्रमों की जानकारी प्राप्त की गयी। स्वास्थ्य शिविर नया गाँव में आयोजित किया गया। टीम वहाँ पहुँची तथा स्वास्थ्य टीम से मिली, वहाँ की गतिविधियों को समझा तथा गृह भ्रमण के तरीके को जाना। जी.एम.वी.एस. टीम द्वारा टीम का धन्यवाद किया गया व संस्थान विजीट का निवेदन किया गया।

फर्स्ट एंड बॉक्स वितरण :– कार्यक्रम के तहत 12 गाँवों के राजकीय प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालयों में नववर्ष पर फर्स्ट एण्ड बॉक्स का वितरण किया गया। टीम के द्वारा बालक–बालिकाओं के साथ जागरूकता बैठकों का आयोजन किया जाता है। टीम के द्वारा फर्स्ट एंड बॉक्स में 12 उपकरण सामग्री का समावेश किया गया। जिसमें बिटाडीन, बेन्डेड, छोटी पट्टी, बड़ी पट्टी, कैंची, रूई इत्यादि जैसी सामग्री दी गई। टीम के द्वारा अध्यापक व अध्यापिकाओं को प्रत्येक सामग्री के उपयोग की जानकारी दी गई तथा समय–समय पर टीम द्वारा नई सामग्री का समावेश किया जायेगा।

ग्रासरूट नेतृत्व विकास कार्यक्रम – कोरो
Grassroot Leadership Development Programme - CORO

कोरो फोर लिटरेसी के सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान के द्वारा संचालित पंचायत समिति श्रीनगर के गाँवों में फेलोशिप कार्यक्रम जून 2016 से किया जा रहा है। इसके द्वारा लोगों को सरकारी योजनाओं से जोड़ना, फॉम भरना, कोरोना के प्रति जागरूक कर गरीबों व असहाय लोगों को खाद्य सामग्री, सेनेटाइजर्स, मास्क वितरीत करना व सिलाई बुनाई आदि योजनाओं से जोड़कर रोजगार दिलाना व कौशल सिखाने का कार्य किया गया। कोरो संस्थान के द्वारा गाँव की अलग–अलग समस्या जैसे – बाल विवाह, बालिका शिक्षा, मृत्यु भोज, रूढ़ीवादी परम्परा, अंधविश्वास जैसे मुद्दों पर गाँव के लोगों को जागरूक करना व उनसे होने वाले कुप्रभावों से अवगत करवाया गया। स्थानीय महिलाओं को फेलो बनाया ताकि महिलाओं को रोजगार मिले और अपने और आस–पास के गाँवों में उन महिला को फेलो के रूप में चुना गया जो कि खुद फेलो भी मुद्दों से प्रभावग्रस्त है। इसलिए श्रीनगर पंचायत समिति के गाँवों में कोरो संस्थान के साथ पाइलेट कार्यक्रम कर रही है। वर्तमान में अजमेर जिले के हाथीपट्टा, फारकिया, खाजपुरा, ढुंगरी, कालबेलिया की ढाणी व मोहनपुरा गाँवों में सभी लोगों के साथ बैठकें, केम्प, शिविर, नुक्कड़ नाटक, रेलियाँ, चौपाल व प्रशिक्षण किया उसका अच्छा प्रभाव देखने को मिल रहा है। कोरो की इस प्रकार की परियोजना से गाँव के लोगों की सोच बदलने लगी है। संस्थान को भी इस तरह के मुद्दों पर कार्य करने से बहुत कुछ सीखने को मिला है। लोगों की फेलोशिप कार्यक्रम में रूची बढ़ने लगी है। कोरो संस्थान उनके बारे में परिवार की तरह सोचने व कार्य करने से लोग अपनी परम्पराओं को बदलने के लिए तैयार है। संस्थान भविष्य में कोरो के साथ जुड़कर अन्य गाँवों में भी इस तरह के कार्य करना चाहती है। फेलोशिप कार्यक्रम के लिए संदर्भ व्यक्ति भी तैयार किये जा रहे हैं। इस कार्यक्रम से निम्न बदलाव आये हैं।

समुदाय में बदलाव :– कोरो से जुड़ने के बाद समुदाय में बदलाव आये। कुछ लोगो की सोच में बदलाव आया कि लोग जहाँ हमारे मुद्दें पर कुछ सुनना पसन्द नहीं करते थे। अब वे बैठकों में आने लगे है। समुदाय में जो परिवर्तन आये है वह मुख्य रुप से तीनों क्षेत्रों में देखे जा सकते है –

राजनैतिक बदलाव :– राजनैतिक क्षेत्र में यह बदलाव आया कि पहले महिलाएँ पंचायत तक नहीं जा पाती थी पर अब वो पंचायत जाने लग गई है। पहले सरपंच से बात नहीं कर सकती थी पर अब वह सरपंच के सामने अच्छे से बोल सकती है।

शैक्षणिक बदलाव :– कोरो से जुड़ने के बाद हमारे समुदाय में शैक्षणिक बदलाव आये। हमारे समुदाय कि लगभग 10–15 लड़कियाँ ने जिन्होनें स्कूल छोड दी थी वे वापस पढ़ाई शुरू की।

सामाजिक बदलाव :– सामाजिक बदलाव में यहाँ हमारे मुद्दें पर बात करने व मिटिंग करने व मिटिंग में आने से महिलाएँ डरती थी। तो अब वे आने लगी।

अन्य गतिविधियाँ :–

- स्कूल में ज्योतिराव फुले का कार्यक्रम रखा।
- पानी की टंकिया ठीक करवाई।
- लोगों के मुद्दें के अलावा अन्य समस्या पर मदद की।
- पानी की समस्या को लेकर गाँव में सर्वे किया।
- बालिकाओं की शिक्षा को लेकर महिलाओं को मूवी दिखाई।
- गाँव के नवयुवक संगठन में युवतियों को जोड़ने का प्रयास किया।

GMVS

तकनीकि साक्षरता कार्यक्रम – सीएमएफ
Internet Sathi Programme - CMF

पृष्ठभूमि :– टाटा ट्रस्ट व गूगल इण्डिया के सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी द्वारा अजमेर जिले के श्रीनगर पंचायत समिति के 45 राजस्व गाँवों में तकनीकि साक्षरता कार्यक्रम 1 मार्च 2019 से 30 सितम्बर 2019 तक संचालित किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य गाँवों की महिलाओं व उनके समुदाय को ईन्टरनेट को रोजमर्रा की जिन्दगी में उपयोग बताकर उन्हें सशक्त करना है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए इस कार्यक्रम के अर्न्तगत मोबाईल फोन व टेबलेट बाँटें गये व उनके उपयोग के बारे में इन्टरनेट साथी द्वारा पूरी जानकारी दी गई।

तकनीकि साक्षरता कार्यक्रम में सेन्टर फॉर माइक्रो फाइनेन्स जयपुर ने तकनीकि सहयोग व मार्गदर्शन देकर इस कार्यक्रम का सफलतापूर्वक संचालन किया गया। क्योंकि इस कार्यक्रम से 15 महिला साथी ने 45 गाँवों में लाभान्वित किया गया।

तकनीकि साक्षरता कार्यक्रम के शुरूआत में बहुत पेरशानियाँ उत्पन्न हुई क्योकि ग्रामीण क्षेत्र में विशेषतौर से महिलाओं को मोबाईल व इन्टरनेट के माध्यम से विभिन्न जानकारी देने के लिए जब गाँव में साथी जाती तो महिला के परिवार वाले मोबाईल के माध्यम से कुछ सिखाने की बात करते तो परिवार मना कर देते थे। लेकिन संस्थान के द्वारा उन गाँवों में महिला समूह, स्वास्थ्य व शिक्षा जैसे विभिन्न परियोजना संचालित की जा चूकी थी। धीरे–धीरे लोगों को तकनीकि साक्षरता कार्यक्रम से विभिन्न जानकारी होने लगी थी।

इस कार्यक्रम में प्रत्येक साथी को तीन गाँवों में 700 महिलाओं को साक्षर करना था। संस्थान ने 6 माह में प्रत्येक साथी को 6 माह के अन्दर 700 महिलाओं को तकनीकि रूप से साक्षर किया था।

प्रभाव :– ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी द्वारा तकनीकि साक्षरता कार्यक्रम के संचालन से 45 गाँवों में महिलाओं को सबसे बड़ा फायदा यह हुआ कि समूह से जुड़ी महिलाएँ अपना–अपना हिसाब खुद करने लगी है। और जो स्वरोजगार को बढ़ाने और तकनीकि सुधार करने के लिए उपयोगी साबित हुआ।

लाभ :–

- महिला साथियों को रोजगार।
- महिला सशक्तिकरण हुआ।
- महिलाओं को तकनीकि साक्षरता प्राप्त हुई।
- देश विदेश की जानकारी।
- स्वरोजगार की गुणवत्ता में सुधार।
- महिलाओं के विचारों का समावेश।

गतिविधियाँ :–

- ब्लॉक कोर्डिनेटर व इन्टरनेट साथी का चुनाव।
- कार्यक्रम के कार्यकाल में सारे साधनों को बजट के अनुसार उपलब्ध करवाना।

अब मेरी बारी कार्यक्रम–अरावली (Ab Meri Bari Programme-Aravali)

अरावली जयपुर, प्रेक्सीस व दासरा के वित्तीय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान द्वारा अजमेर जिले की पंचायत समिति भिनाय व ग्राम पंचायत लामगरा व बुबकिया के 10 गाँवों में अब मेरी बारी कार्यक्रम का संचालन किया गया। जिसमें बालिका–शिक्षा, स्वास्थ्य, खान–पान, घरेलू हिंसा, बालिका अधिकार पर

ग्राम स्तरीय बैठकों व ईवेन्ट के माध्यम से बालिकाओं व उनके माता–पिता को जागरूक किया गया।

लक्ष्य :– जागरूकता बढ़ाना।

उद्देश्य :–

- ❍ बालिका शिक्षा को बढ़ावा देना।
- ❍ बालिकाओं को स्वच्छता के प्रति जागरूक करना।
- ❍ बालिकाओं को उनके अधिकारों से अवगत करवाना।
- ❍ सरकारी योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ दिलवाना।

गतिविधियाँ :–

गर्ल्स चैम्पियन का चयन :– बालिकाओं को अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने के लिए उन्हीं के बीच से जागरूक बालिका का चयन किया गया जिसे प्रशिक्षण देकर व शैक्षणिक भ्रमण करवाकर उनका मनोबल व जानकारी बढ़ाई तथा उनके द्वारा अन्य बालिकाओं को प्रेरित किया गया।

कार्यक्षेत्र में गाँवों का चयन :– क्षेत्र में उन गाँवों का चयन किया गया जहाँ उप स्वास्थ्य के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र ग्राम से दूरी पर है तथा स्वास्थ्य सेवाएँ कम मिलती है।

आँगनबाड़ी केन्द्र :– ग्राम स्तर पर संचालित आँगनबाड़ी है मगर जो सुविधाएँ वहाँ मिलनी चाहिए वो मिल नहीं पा रही है। जैसे :– पूरक पोषाहार, सेनेट्री नेपकिन, आयरन गोलियाँ आदि सब उपलब्ध नहीं हो रही है या अपर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। अब मेरी बारी कार्यक्रम के माध्यम से जागरूकता फैलायी गयी। जिसमं आँगनबाड़ी से मिलने वाली सुविधाओं के बारे में बैठकों के माध्यम से अवगत करवाया जो लोग जानकारी के अभाव में आँगनबाड़ी के द्वारा मिलने वाली सुविधाओं का लाभ नहीं ले रहे थे। उन्हे अवगत करवाया गया।

गर्ल्स चैम्पियन प्रशिक्षण :– बालिकाओं को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने के लिए चयनित गर्ल्स चैम्पियन का 5 दिवसीय प्रशिक्षण सीतापुर, जयपुर व करौली में आयोजित हुआ। जिसमें उन्हें मिली जानकारी को कार्यक्षेत्र में लोगों तक पहुँचाया गया। प्रशिक्षण से बालिकाओं का आत्मविश्वास बढ़ा तथा अपनी बात किसी मंच के माध्यम से अन्य लोगों के साथ पहुँचाने का मौका मिला। गर्ल्स चैम्पियन द्वारा किया गया कार्य उनके लिए गर्व की बात रही।

स्कोर कार्ड सर्वे :– गर्ल्स चैम्पियन द्वारा सर्वे किया गया जिसमें आँगनबाड़ी, पी.एच.सी. व उपस्वास्थ्य केन्द्र, गाँव विद्यालय, पुलिस थाना का स्कोर कार्ड सर्वे किया गया जिसमें सरकारी योजनाओं विभाग द्वारा दी जाने वाली जानकारी के बारे में लोगों को कितना पता है या उनकी पहुँच कैसी है जानकारी तो है मगर लाभ मिल रहा है या नहीं, मिल रहा है तो कितने लोगों को मिला है। तमाम जानकारी हेतु स्कोर कार्ड सर्वे किया गया तथा सर्वे का एकीकरण करके राज्य स्तर पर सम्बन्धित विभाग को अवगत करवाया गया।

समुदाय शिक्षा ⟶ समुदाय स्वास्थ्य ⟶ समुदाय आहर पोषण ⟶ बाल सुरक्षा ⟶ यौन एवं प्रजनन

बालिकाओं के साथ बैठक :– स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने के लिए बालिकाओं के साथ साप्ताहिक, मासिक, पाक्षिक बैठकें आयोजित की गयी। जिसमें माहवारी के समय रखी जाने वाली साफ सफाई तथा उपयोग

किये जाने वाले सेनेट्री पेड, नेपकिन या साफ कपड़े के उपयोग के बारे में विस्तार से जानकारी दी गयी साथ ही रखी जाने वाली सावधानियों के बारे में अवगत करवाया गया। माहवारी के समय खून के बहाव की कमी को पूरा करने के लिए आयरन की गोलियों के सेवन के बारे में प्रेरित किया गया। आयरन की गोली के उपयोग से हाने वाले फायदों के बारें में विस्तार से उनके साथ घुलमिल कर गर्ल्स चैम्पियन द्वारा अवगत करवाया गया।

बालिकाओं के माता–पिता के साथ बैठकें :– गर्ल्स चैम्पियन द्वारा किशोर–किशोरियों के माता–पिता के साथ बैठकें आयोजित की गई। जिसमें उनके स्वास्थ्य, शिक्षा पर विस्तार से जानकारी दी तथा उनके उज्जवल भविष्य के लिये शिक्षा दिलवाने पर जोर दिया गया। उनके स्वस्थ रहने हेतु संतुलित आहार पर ध्यान केन्द्रित करवाया गया।

मोबाईल वाणी :– इस गतिविधि में मोबाईल वाणी टोल फ्री नम्बर पर ऑनलाईन सर्वे किया गया जिसमें किशोर–किशोरियों के स्वास्थ्य के प्रति आने वाली समस्याओं तथा जानकारी से अवगत करवाया गया।

किशोर–किशोरियों का प्रशिक्षण :– किशोर–किशोरियों का ग्राम स्तर पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया। जिसमें उन्हें स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया गया साथ ही उनको स्वास्थ्य केन्द्र से मिलने वाली सेवाओं के बारे में अवगत करवाया गया एवं योजना व उपलब्ध सेवा का लाभ लेने हेतु प्रेरित किया गया। अमानवीय घटनाएँ घटने के कारणों पर जोर दिया गया।

बस ट्यूर :– अब मेरी बारी कार्यक्रम संचालित कार्यक्षेत्र के जिला मुख्यालयों पर अरावली–जयपुर, प्रेक्सीस–दिल्ली व दासरा संस्थान स्थानिय संस्थानों के गर्ल्स चैम्पियन द्वारा बस ट्यूर का आयोजन किया गया। क्षेत्र में आ रही समस्या के बारे में अवगत करवाया गया।

स्वयं सहायता समूह डिजिटाईजेशन–ई शक्ति कार्यक्रम
SHG Digitization-E Shakti Programme

पृष्ठभूमि :– राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक के वित्तिय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी, अजमेर के द्वारा महिला स्वयं सहायता समूह कार्यक्रम को संचालित हुए 16 वर्ष हो चुके है। राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक की शुरूआत की गई इस परियोजना में 1305 समूह को अजमेर ई शक्ति कार्यक्रम में जोड़ा गया है। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य समूह व सदस्यों की सम्पूर्ण जानकारी कम्प्यूटरीकृत और ऑनलाईन करना है ताकि समूह या सदस्य को किसी भी सरकारी योजनाओं से जोड़ा जा सके व समूह से जुड़े परिवार का फायदा हो सके। समूह सदस्य की बचत, आंतरिक लेनदेन, बैंक लोन जो कि हर माह में ट्रांजेक्शन होता हैं। यह सम्पूर्ण जानकारी समूह सदस्य के मोबाईल में एस.एम.एस. के जरिये सदस्य को प्राप्त होती है। पूरे समूह के सदस्यों को समूह की जानकारी मिलती रहें।

परियोजना के उद्देश्य :–

- समूहों का अन्य संस्थाएँ, बैंक व सरकार से जुड़ाव करवाना।
- समूहों का एकीकरण।

- ✳ समूहों की ग्रेडिंग को आसान करना।
- ✳ समूह के सभी सदस्यों को जीवन बीमा, पेंशन योजना से जोड़ना।
- ✳ बैंक तथा समूह की बीच की दूरी को कम करना।
- ✳ समूह सदस्यों को लेनदेन की जानकारी मैसेज के जरिये देना।
- ✳ समूहों का ऑनलाईन रिकॉर्ड।
- ✳ समूहों की ऑनलाईन ऑडिट।
- ✳ संस्थागत रिकॉर्ड।
- ✳ पारदर्शिता लाना।
- ✳ समूहों की ऑनलाईन लोन फाईल का प्रोसेस करना जिससे समूह को आसानी से बैंक लोन उपलब्ध हो।
- ✳ सरकारी योजनाओं का लाभ समूहों के सभी सदस्यों तक पहुँचाना।

ई–शक्ति परियोजना का कार्यक्षेत्र :– ई शक्ति एस.एच.जी. डिजीटाईजेशन परियोजना का संचालन जनवरी, 2018 से ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी, अजमेर द्वारा किया जा रहा है। इस परियोजना को राष्ट्रीय कृषि ग्रामीण विकास बैंक के वित्तीय सहयोग से संचालित किया जा रहा है। यह परियोजना अजमेर जिले के श्रीनगर, सिलोरा, सरवाड़, पीसांगन, भिनाय, केकड़ी, जवाजा, मसूदा व अरांई ब्लॉक में संचालित की जा रही है। इस परियोजना में एक एनीमेटर को 30 समूहों की डाटा एन्ट्री करनी होती हैं। उसके पास 4 जी एन्डरोइड फोन भी नाबार्ड व संस्थान के द्वारा दिया गया है। एक एनीमेटर को 2000/– रूपये डाटा एन्ट्री के व 100/– रुपये मोबाईल डाटा पैक के दिये जाते है। ग्रामीण महिला विकास संस्थान के 1305 महिला समूहों में 43 एनीमेटर्स डाटा एन्ट्री का कार्य करते है। एनीमेटर्स समूह की बैठक में लेनदेन की सम्पूर्ण जानकारी सॉफ्टवेयर में एन्ट्री करते है और प्रत्येक सदस्य की विभिन्न प्रकार की जानकारियाँ जैसे – आधार कार्ड, मोबाईल नम्बर, फोटो, बैंक खाता संख्या, बचत राशि व बैंक से प्राप्त समूह में बैंक लोन आदि की जानकारी ई–शक्ति ऐप में अपलोड करते है। संस्थान कार्यालय से प्रिन्ट लेकर समूह के सदस्यों को देते है व एक कॉपी संस्थान कार्यालय में लाकर जमा करवाते है। इसी के साथ–साथ सरकार द्वारा चलायी जा रही सामाजिक सुरक्षा योजनाओं व अन्य सरकारी योजनाओं से समूह सदस्यों को जोड़ा गया हैं जैसे–प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, माईक्रो इंश्योरेंस आदि। इस वर्ष उपरोक्त सरकारी योजनाओं से सदस्यों का जुड़ाव यह है।

एस.एच.जी. संख्या	कुल सदस्य संख्या	प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना	प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना	अटल पेंशन योजना	जनधन खाता योजना	माईक्रो इन्श्योरेन्स
1305	13868	4325	2099	640	854	230

परियोजना की उपलब्धियाँ :–

- ❖ हाथ से लिखने व चेक करने का समापन होना।
- ❖ समूहों को बैंक से जोड़ने में आसानी हुई।
- ❖ बाहरी संस्थाओं के द्वारा समूहों की जाँच होना।
- ❖ महिलाओं की सम्पूर्ण जानकारी ऑनलाईन हो जाना।
- ❖ समूह सदस्यों में आपसी विश्वास।
- ❖ संस्थान को कार्य करने में आसानी।
- ❖ बैंकों का विश्वास बढ़ाना।
- ❖ क्षेत्रिय बैंको को व्यवसाय उपलब्ध।
- ❖ समूहों का रिकोर्ड ऑनलाईन होने से पारदर्शिता आना।
- ❖ समूहों का सम्पूर्ण रिकोर्ड कम्प्यूटर व मोबाईल पर उपलब्ध होना।
- ❖ समूहों के सभी सदस्यों को सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से जोड़ना व उनके परिवार के सदस्यों को भी सुरक्षा योजना के बारे में जानकारी उपलब्ध करवा कर योजनाओं का लाभ लेने के लिये प्रेरित कर सरकारी योजनाओ से जुड़ाव करना।

GMVS

राही ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम (साईट सेवर्स)
Raahi Truckers Eye Health Programme (Sight Savers)

पृष्ठभूमि :– साईट सेवर्स, नई दिल्ली व रेबन के वित्तिय व तकनीकी सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान ने जून 2018 से राही ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम शुरू किया। ट्रक ड्राइवरों के समुदाय के लिए देश के सबसे बड़े नेत्र स्वास्थ्य कार्यक्रमों में से एक कार्यक्रम है राही ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम जो मई 2019 तक सुचारू रूप से चलाने के बाद वर्ष 2019 से 2020 तक के लिए आगे बढ़ा दिया। इस कार्यक्रम के प्रारम्भ में दिनांक 19 व 20 जून 2018 को सारे कार्यकर्त्ताओं का टेबलेट व पोर्टल को चलाने हेतु प्रशिक्षण रखा गया और दिनांक 21 जून 2018 को कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। जिसमें साईट सेवर्स से श्री अमरेश पाण्डे, श्री शेलेन्द्र व सुश्री वरिधि सिंह भी उपस्थित थे। श्री शेलेन्द्र सर के द्वारा टेबलेट की समस्त डाटा एन्ट्री जिसमें विभिन्न होटल व साईट सेवर्स के लामाना सेन्टर (राही दृष्टि केन्द्र) पर आये। ड्राईवरों व क्लीनरों का बेसिक विवरण भरना होता है तथा कैसे साईट सेवर्स के पेल्यूसिड पोर्टल पर क्यू आर कोड जनरेट करना, केम्प जनरेट करना, चश्मो के ऑर्डर व उनकी ड्राईवरों को डिलीवरी दिखाना है यह सब बताया। सभी गतिविधियों का प्रशिक्षण पाने के बाद दिनांक 22.6.2018 को पहला केम्प विजन सेन्टर लामाना में रखा गया तथा ज्याद से ज्यादा ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों को कार्यक्रम के तहत लाभ प्रदान किया जा रहा है। मार्च 2019 में एक वर्ष सफलता पूर्वक पूरा करने के बाद माह मई 2019 में विजिन सेन्टर को किशनगढ़ में स्थानान्तरित कर दिया क्योंकि यहाँ भीलवाड़ा, ब्यावर व पंजाब तीनों रूट के सारे ट्रक ड्राईवर आते है व यहाँ से चश्में डिलीवरी करना भी आसान हो जाता है।

साईट सेवर्स के वित्तिय सहयोग से जो विजन सेन्टर वर्ष 2018 में खोला गया था वह लामाना में एन.एच. रोड़ से 100 मीटर की दूरी पर बना हुआ है अब वर्ष 2019 में यह विजन सेन्टर किशनगढ़ में देव मार्केट, मकराना राज होटल के सामने, तोलामाल में स्थानान्तरित कर दिया हैं। इस कार्यक्रम में 5 कार्यकत्ताओं की टीम है एक ओप्टोमेट्रिस्ट, दो सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता, एक सहायक ऑप्टोमेट्रिस्ट व एक लेखाकार है। विजिन सेन्टर में प्रथम टेबल पर ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों का रजिस्ट्रेशन किया जाता है, दूसरी टेबल पर स्क्रीनिंग टेस्ट व तृतीय टेबल पर ऑप्टोमेट्रिस्ट होता है। सब से पहले कम्यूनिटी हेल्थ वर्कर होटल पर आये हुए ड्राईवरों से बात कर उन्हें आँखों की जाँच करवाने हेतु प्रेरित करता है और उन्हें सेन्टर पर भेजता है। टेबल नं. 1 पर ट्रक ड्राईवरों को बैठा कर उनका आई कार्ड बनाया जाता है व उनसे ड्राइविंग लाईसेन्स मांगा जाता है। साथ ही अन्य जानकारी जैसे नाम, उम्र, मोबाईल नम्बर, ड्राईविंग लाईसेन्स, रिन्यूवल की दिनांक, वेतन, उनकी गाड़ी का रूट, जाति, मेडिकल व अन्य बीमा है या नहीं, शराब व सिगरेट पीने की आदत, दूर से उन्हें कैसा दिखता है, मेडिकल जाँच करवाते है या नहीं कभी उनका एक्सीडेन्ट तो नहीं हुआ आदि विभिन्न प्रकार की जानकारी लेते है। उसके बाद टेबल नम्बर 2 पर उनकी आँखों की जाँच की जाती है और उसके बाद उनको ग्रेड दी जाती है। यदि ग्रेड ए मिली होती है तो ड्राईवर पुनः 1 नम्बर टेबल पर जाता है और यदि अन्य ग्रेड मिली होती है तो 3 नम्बर टेबल पर जाता है और उसे कौनसे नम्बर का चश्मा लगेगा यहा जाँच किया जाता है। यदि उसे पास की नजर की परेशानी होती है तो उसे उसी वक्त चश्मा दिया जाता है और यदि दूर का या बाय फोकल आता है तो उस चश्में का ऑर्डर दिया जाता है जो कि टेबल नम्बर 1 पर होता है।

कार्यक्रम उद्देश्य :–

1. ट्रकर्स को प्राईमेरी आई केयर सर्विसेज उपलब्ध करवाना जिनको जाँच रिफ्रेक्शन की जरूरत है उन्हें इस कार्यक्रम के द्वारा मदद करना।
2. आँखो के स्वास्थ्य की महत्वता को ध्यान में रखकर लोगों को जागरूक करना।
3. तकनीकि की मदद से सारे ट्रक ड्राईवरों का डाटा एकत्रित करना।
4. राही ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य कार्यक्रम के नाम से ही स्पष्ट है। इसका मुख्य उद्देश्य ट्रक ड्राईवर्स, क्लीनर्स की आँखों की जाँच कर उन्हें चश्मा वितरण करना, आँखों को सुरक्षित रखने के लिये समय–समय पर उनकी जाँच करवाना नियमित रुप से आँखों को ठण्डे साफ जल से धोना चाहिए व अन्य जानकारी उपलब्ध करवाना जिससे वे अपनी आँखों का बेहतर तरीके से ध्यान रख सकें।
5. आँखों की देखभाल करने के साथ–साथ अपनी व अपने परिवार की सम्पूर्ण सेहत का ध्यान रखने के लिये प्रेरित करना है। सड़क दुर्घटना को कम करना।
6. समय न मिल पाने के कारण जो ट्रक ड्राईवर व क्लीनर आँखों की जाँच नहीं करवा पाते है उन्हें उनके रास्ते में ही आँखों की जाँच का केन्द्र उपलब्ध करवाना।
7. ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों को उनके स्वास्थ्य व बेहतरीन जीवन जीने के लिए प्रेरित करना।
8. ट्रक ड्राईवर्स तथा उनके परिवार को सुरक्षित भविष्य दिलवाना।
9. ट्रक ड्राईवर्स व क्लीनरों को आँखों की जाँच के लिए प्रेरित करना।
10. कम आय के कारण ट्रक ड्राईवर व क्लीनर अपनी आँखों की जाँच नहीं करवा पाते है इस समस्या को दूर करने के लिए उन्हें इस कार्यक्रम के माध्यम से उनके कार्यस्थल पर आँखों की जाँच की सेवाये व चश्में आसानी से उपलब्ध करवाना।
11. जानकारी के अभाव में वे अपनी आँखों में जलन होने, पानी आने व अन्य समस्या पर ध्यान न देकर इसे सामान्य समस्या या आँखों की थकावट का कारण समझते है ऐसी स्थिति में उन्हें आँखें कमजोर होने व समय के साथ–साथ आँखों की रोशनी कम हो जाती है। इसकी जानकारी देना जिससे व अपनी समस्या के प्रति जागरूक हो और इस ओर ध्यान दें।
12. उन्हें अपनी सेहत की महत्ता समझाना व बताना कि स्वास्थ्य ही मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा धन है। अगर हम शारीरिक रुप से स्वस्थ रहेंगे तो ही मानसिक व अन्य रुप से स्वस्थ व खुश रहेंगे, जिससे हर कार्य अच्छे से कर पाएंगें। अपने जीवन के लक्ष्य प्राप्त करेंगे व अपने परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत कर पायेगें। अतः स्वस्थ रहना आवश्यक है।

गतिविधियाँ :–

1. एक विजन सेन्टर की स्थापना करना तथा विभिन्न होटलों पर केम्प आर्गेनाइज करना :– प्रशिक्षित ऑपटोमेट्रिस्ट, ऑपथेल्मिक असिस्टेन्ट के द्वारा विभिन्न होटलों पर केम्प आयोजित कर उन ट्रक ड्राईवरों को कवर करना जो कि रास्ते से निकल रहे हैं।

2. ट्रकिंग समुदाय के लिए नेत्र स्वास्थ्य शिक्षा :– नेत्र देखभाल से संबन्धित भेद्यता और जोखिम को कम करने के लिए दृष्टिकोण, सूचना और कौशल के साथ ट्रकर्स समुदाय के साथ ट्रक ड्राईवरों के बीच नेत्र

स्वास्थ्य की मांग को बढ़ावा देने के लिए ट्रकर्स समुदाय के साथ विभिन्न आईईसी गतिविधियाँ करना।

3. ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच :– कार्यक्रम के अन्तर्गत विजन सेन्टर (लामाना), विभिन्न होटल जैसे जगदम्बा, लाडी, राज चिडिया, ट्रांसपोर्ट नगर, एच.पी. गैस प्लांट व बी.पी. गैस प्लांट पर आँखें जाँचने हेतु शिविर आयोजित किया जाता है। जिसमें माह जून से लेकर माह मार्च 2019 तक लगभग 4000 ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों की आँखें जाँची गई उसके बाद माह अप्रैल 2019 से मार्च 2020 तक लगभग 6942 ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों की आँखे जाँची गई, इस प्रकार कार्यक्रम प्रारम्भ होने से लेकर मार्च 2020 तक कुल 10942 ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों की आँखे जाँची गयी।

4. चश्मों का वितरण :– ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच करने के बाद यदि उन्हें देखने में परेशानी होती है तो आँखों की जाँच के अनुसार समस्या का पता कर उन्हें पास व दूर के चश्में वितरीत किये जाते है। जिनको पास की नजर में परेशानी होती है उन्हें पास की नजर का चश्मा उसी वक्त दे दिया जाता है और जिन्हें दूर की नजर में परेशानी होती है उनके लिए चश्मा ऑर्डर किया जाता है। जो एक सप्ताह बाद आ जाता है और ट्रक ड्राईवरों के वापस आने पर उन्हें दे दिया जाता है। माह जून से लेकर माह मार्च तक 1300 चश्में वितरीत किये गये। माह अप्रैल 2019 से मार्च 2020 तक 1966 चश्मे वितरीत किए गयें। इस प्रकार कार्यक्रम प्रारम्भ होने से लेकर मार्च 2020 तक कुल 3581 ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों को चश्मे वितरीत किए गए।

5. जागरूकता फैलाना :– राही ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम के द्वारा सभी ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों में जीवन बीमा, एक्सीडेण्ट बीमा करवाने के साथ ही समय–समय पर बी.पी., शुगर चेक करवाने, मासिक स्वास्थ्य जाँच, आँखों की जाँच करवाने, पौष्टिक आहार खाने व काम के साथ–साथ अपनी सेहत को भी महत्व देना चाहिए इत्यादि के बारे में जागरूकता फैलायी जाती है।

6. स्वास्थ्य शिविर का आयोजन :– राही ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम अन्तर्गत हमारे हंस मोबाईल मेडिकल सर्विसेज कार्यक्रम के द्वारा हेल्थ केम्प आयोजित किये गये जिसमें ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों के स्वास्थ्य की जाँच की गई व एक ट्रक ड्राईवर का एक्सीडेन्ट होने पर उसे घर जाकर पट्टी की तथा इसी प्रकार ड्राईवरों को मोबाईल मेडिकल यूनिट से जोड़ा जा रहा है।

7. प्रचार प्रसार कर ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों को आँखों की जाँच के लिए प्रेरित करना :– राही ट्रर्क्स आई हेल्थ कार्यक्रम अन्तर्गत पेम्पलेट बांट कर बेनर लगाकर प्रचार–प्रसार किया जाता है तथा ज्यादा से ज्यादा ड्राईवरों को जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

माह मार्च 2020 में कोविड 19 के होने के कारण सभी केम्प बन्द कर दिय गये व मास्क, सेनिटाइजर्स, खाद्य सामग्री बाँटने तथा जागरूकता फैलाने का कार्य किया गया।

उपलब्धियाँ :– इस कार्यक्रम के द्वारा विजन सेन्टर व विभिन्न होटलों पर केम्प लगाया जाता है जिसमें विजन सेन्टर पर प्रति दिन लगभग 12 व होटल पर प्रति दिन लगभग 55 ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच की जाती है। आँखों की जाँच के केम्प राज चिडिया, लाडी होटल, ट्रांसपोर्ट नगर, एच.पी. गेस प्लांट, बी.पी. गैस प्लांट आदि जगहों पर लगाये जाते है। जिनका जून, 2018 से मार्च, 2020 तक का डाटा निम्न है।

वर्ष	विजन सेन्टर पर ओपीडी	केम्प पर ओपीडी	कुल ओपीडी	कुल चश्में वितरण
जून 2018 से मार्च 2019	1344	2637	3981	1300
अप्रैल 2019 से मार्च 2020	3636	3306	6942	1966
कुल	**4980**	**5943**	**10923**	**3266**

सक्षम स्कोलरशिप कार्यक्रम – अरावली
(Saksham Scholarship Programme - Aravali)

अरावली व सीएफआईएल के सहयोग से सक्षम स्कोलरशिप कार्यक्रम में ट्रक ड्राईवर के परिवार वालों के साथ जागरूकता कार्यक्रम कर उन्हें विभिन्न परियोजनाओं से जोड़ा गया जैसे की ट्रक ड्राईवरों के घरों की महिलाओं को हमारे द्वारा बनाये गये स्वयं सहायता समूह से जोड़ कर उन्हें बैंक से जोड़ा गया तथा ट्रक ड्राईवरों के बच्चों को सक्षम स्कोलरशिप से जोड़ कर परीक्षा दिलवाई गई। जिन बच्चों ने अरावली व सीएफआईएल के सहयोग से सक्षम स्कोलरशिप 2019 परीक्षा को पास कर आई.टी.आई. व नर्सिंग की पढ़ाई शुरू की उन बच्चों की सूची इस प्रकार है।

क्र.सं.	नाम	गाँव का नाम	कोर्स का नाम	राशि
1	गोविन्द पुत्र श्री रामेश्वर	पनेर	आई.टी.आई.	40000
2	ओमप्रकाश पुत्र श्री दयालराम गुर्जर	तोलामाल	आई.टी.आई.	40000
3	जितेन्द्र पुत्र श्री उमरावमल गुर्जर	तोलामाल	आई.टी.आई.	40000
4	भोजराज पुत्र श्री मेवाराम गुर्जर	तोलामाल	आई.टी.आई.	40000
5	विकास पुत्र श्री विश्राम गुर्जर	पाटन	आई.टी.आई.	40000
6	सागर शर्मा पुत्र श्री देवराज शर्मा	किशनगढ़	नर्सिंग (जीएनएम)	40000
7	राहुल पुत्र श्री राजेश भार्गव	भदूण	आई.टी.आई.	40000
8	सपना रावत पुत्री श्री भागसिंह रावत	काजीपुरा	आई.टी.आई.	40000
9	पिनाक पुत्र अमर भार्गव	किशनगढ़	आई.टी.आई.	40000
10	अनिल सिंह पुत्र श्री महावीर सिंह	किशनगढ़	आई.टी.आई.	40000
11	सुनिल रावत पुत्र श्री शंकरसिंह रावत	दांता	आई.टी.आई.	40000
12	हेमन्तसिंह पुत्र महावीरसिंह	किशनगढ़	आई.टी.आई.	40000
13	सुनिता खटीक पुत्री श्री रतनलाल खटीक	सिलोरा	आई.टी.आई.	40000
14	गणेश रायका पुत्र श्री हेमचन्द	जोगियों का नाडा	आई.टी.आई.	40000
15	सुरेन्द्रसिंह पुत्र श्री मोहनसिंह	मुहामी	आई.टी.आई.	40000
			कुल योग	**600000/–**

ट्रकर्स कम्यूनिटी लाईवलीहुड स्ट्रैन्थनिंग कार्यक्रम–अरावली
Truckers Community Livelihood Strengthening Programme-Aravali

पृष्ठभूमि :– चोलामण्डलम व अरावली के वित्तिय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान के द्वारा आयोजित ट्रकर्स कम्यूनिटी लाइवलीहुड स्ट्रेन्थनिंग कार्यक्रम दिनांक 16.06.2019 को भीलवाड़ा व चित्तौडगढ़ हाइवे 79 पर शुभारम्भ किया। इस कार्यक्रम के तहत ट्रक चालक के स्वास्थ्य शिविर केम्प किये गये जिसमें 1516 ट्रक ड्राईवर/क्लीनर की आँखे व स्वास्थ्य जाँच कर 750 लोगों को चश्में बाँटे गये।

यह कार्यक्रम वर्ष 2018 से संचालित किया जा रहा है पूर्व में दिनांक 21.04.2018 को श्रीनगर हाइवे 79 पर चोलामण्डलम व अरावली के वित्तिय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्था के द्वारा आयोजित ट्रक चालक के स्वास्थ्य शिविर केम्प का शुभारम्भ किया गया जिसमें शिविर के दौरान 2500 ट्रक चालकों के स्वास्थ्य व आँखों की जाँच कर 1249 लोगों को चश्में बाँटे गये।

कार्यक्रम के उद्देश्य :–

1. रोजाना हो रहे सड़क दुर्घटनाओं को कम करना।
2. समय न मिल पाने के कारण ट्रक ड्राईवरों व क्लीनर आँखों की जाँच नहीं करवा पाते है उन्हें उनके रास्ते में ही आँखों की जाँच का केन्द्र उपलब्ध करवाना।
3. ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों को उनके स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना व बेहतरीन जीवन जीने के लिए प्रेरित करना।
4. ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों को आँखों की जाँच के लिए प्रेरित करना।
5. कम आय के कारण ट्रक ड्राईवर व क्लीनर अपनी आँखों की जाँच नहीं करवा पाते है। इस समस्या को दूर करने के लिए उन्हें इस कार्यक्रम के माध्यम से उनके कार्यस्थल पर आँखों की जाँच की सेवायें व चश्में आसानी से उपलब्ध करवाना।
6. ट्रक ड्राईवर्स व क्लीनर्स को अपनी आँखों की जाँच करवाने के साथ–साथ अपने परिवार के सदस्यों को भी उनकी आँखो की देखभाल करने के प्रति जागरूक करने के लिए प्रेरित करना।
7. ट्रक ड्राईवर्स व क्लीनर्स अपनी आँखों में जलन होने, पानी आने, कम दिखाई देना व अन्य समस्याओं पर ध्यान न देना इन समस्याओं को सामान्य समस्या समझना और जानकारी के अभाव में अपनी आँखों पर ध्यान नहीं देते है। इसलिए उन्हें उनकी आँखों के प्रति जागरूक करने के लिए आवश्यक जानकारी दी गयी। आँखों की रोशनी कम होने पर ये सभी समस्याएँ होती है व इससे बचाव करना आवश्यक है तथा समय पर उपचार हेतु जागरूक किया गया।
8. आँखो से सम्बन्धित समस्या दूर करने के लिए उन्हें आसान उपाय बताना जैसे–पौष्टिक आहार लेना, समय–समय पर आँखों की जाँच करवाना, कम रोशनी में काम न करना समय पर सही उपचार लेना आदि जिससे वे अपनी आँखों की देखभाल अच्छे से कर सके।
9. उन्हें स्वस्थ रहने के फायदे बताना तथा आँखों के अतिरिक्त सरकार द्वारा चलाई जा रही अन्य परियोजना के माध्यम से अन्य स्वास्थ्य सम्बन्धित समस्याओं का भी समय पर उपचार करवाने व स्वस्थ रहने के लिए प्रेरित करना।

कार्यक्रम की गतिविधियाँ :–

1. ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच :– कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न होटल जैसे होटल प्यारे पंजाब, पंजाब हमीरगढ़, बिहारी होटल सरेरी, नंनपुरा गुरूद्वारा, इण्डियन ऑयल डिपार्टमेन्ट, एबीसी होटल, ट्रांसपोर्ट नगर आदित्यपुरा, ट्रांसपोर्ट नगर जे के सीमेन्ट मंगरोल इत्यादि पर आँखे जाँचने हेतु दिनांक 16.06.2019 तक शिविर आयोजित किये गये है। जिसमें 1516 ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों की आँखे जाँची गयी।

2. चश्मों का वितरण :– ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच करने के बाद यदि उन्हें देखने में परेशानी होती तो आँखों की जाँच के अनुसार समस्या का पता कर उन्हें पास व दूर के चश्में वितरीत किये गये जिनको पास की नजर में परेशानी होती है उन्हें पास की नजर का चश्मा उसी वक्त दे दिया जाता था और जिन्हें दूर की नजर में परेशानी होती है उनके लिए चश्मा ऑर्डर किया जाता था। जो एक सप्ताह बाद आ जाता है और ट्रक ड्राईवरों के वापस आने पर उन्हें दे दिया जाता है। इस कार्यक्रम में 750 चश्में वितरीत किये गये।

3. जागरूकता फैलाना :– ट्रकर्स कम्यूनिटी लाइवलीवुड स्ट्रेन्थनिंग कार्यक्रम के द्वारा सभी ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों के जीवन बीमा, एक्सीडेन्ट बीमा करवाने के साथ ही समय–समय पर बी.पी., शुगर चेक करवाने, मासिक स्वास्थ्य जाँच, आँखों की जाँच करवाने, पौष्टिक आहार खाने व काम के साथ–साथ अपनी सेहत को भी महत्वता देनी चाहिए इत्यादि के बारे में जागरूक किया जा रहा है।

4. प्रचार–प्रसार कर ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों को आँखों की जाँच के लिए प्रेरित करना :– ट्रकर्स कम्यूनिटी लाइवलीवुड स्ट्रेन्थनिंग कार्यक्रम अन्तर्गत पेम्पलेट बांट कर बेनर लगाकर प्रचार–प्रसार किया जाता है तथा ज्यादा से ज्यादा ड्राईवरों को जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

उपलब्धियाँ :– इस कार्यक्रम के द्वारा दिनांक 21 अप्रैल 2018 से 27 मई 2018 तक कुल 33 केम्प आयोजित किये गये। जिसमें 2500 ड्राईवर व क्लीनर की आँखों की जाँच कर 1249 ड्राईवर व क्लीनर को चश्मा वितरीत किया गया। तथा दिनांक 16 जून 2019 से 30 जून 2019 तक कुल 13 नेत्र शिविर आयोजित कर 1516 ड्राईवर व क्लीनर की आँखों की जाँच कर 750 ड्राईवर व क्लीनर को चश्मा वितरीत किया गया। जिनका डाटा इस प्रकार है।

क्र.सं.	वर्ष	स्थान	नेत्र जाँच संख्या	वितरीत चश्में
1	2018	79 नेशनल हाईवे श्रीनगर से भीलवाड़ा तक	2500	1249
2	2019	79 नेशनल हाईवे भीलवाड़ा से चित्तौड़गढ़ तक	1516	750
		कुल	**4016**	**1999**

स्वयं सहायता समूह गठन कार्यक्रम – नाबार्ड
Self Help Group Formation Programme - Nabard

राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) के वित्तिय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी, अजमेर के द्वारा पिछले 17 वर्षों से अजमेर व नागौर जिले में महिला सशक्तिकरण हेतु महिला स्वयं सहायता समूह गठन व संचालन निरन्तर किया जा रहा है। नाबार्ड के वित्तिय सहयोग से गठित महिला समूहों में महिलाओं को संगठित किया जाता है। क्योंकि समूह स्तर पर महिलाओं को एक मंच प्रदान किया जाता है इस मंच पर महिलायें एकत्रित होकर सर्वप्रथम आर्थिक स्तर के बारे में मंथन करके महिलाओं को छोटी–छोटी बचत करना सिखाया जाता है समूह के गठन के छः माह बाद समूह को बैंक से जोड़ा जाता है।

राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) के वित्तिय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी, अजमेर के द्वारा पिछले 17 वर्षों से अजमेर व नागौर जिले में महिला सशक्तिकरण हेतु महिला स्वयं सहायता समूह गठन व संचालन निरन्तर किया जा रहा है। नाबार्ड के वित्तिय सहयोग से गठित महिला समूहों में महिलाओं को संगठित किया जाता है। क्योंकि समूह स्तर पर महिलाओं को एक मंच प्रदान किया जाता है इस मंच पर महिलायें एकत्रित होकर सर्वप्रथम आर्थिक स्तर के बारे में मंथन करके महिलाओं को छोटी–छोटी बचत करना सिखाया जाता है समूह के गठन के छः माह बाद समूह को बैंक से जोड़ा जाता है। ताकि महिलाओं को वित्तिय जानकारी मिलें बैंको में समूह के नाम से बचत खाता खोला जाता है और जब समूह को लोन की आवश्यकता हो तब समूह बैंक से लोन लेने के लिये आवेदन कर सकता है।

सन् 2004 से 2005 में जब समूह गठन परियोजना की शुरूआत हुयी तब बैंक में ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को लोन लेने में बहुत ज्यादा तकलीफ होती थी या फिर महिलाओं को कोई भी बैंक लोन देने में असमर्थ थी संस्थान ने बैंको को समझाया महिला स्वयं सहायता समूह को लोन दिया जायें और 100% रिकवरी की जिम्मेदारी संस्थान के शुरूआत में ली। जिससे बैंको को धीरे–धीरे महिला स्वयं सहायता समूह कार्यक्रम पर विश्वास होने लगा था।

ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी, अजमेर के द्वारा राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) के वित्तिय सहयोग से सन् 2004 से महिला स्वयं सहायता समूह गठन व संचालन कर रही है। 2004 से अब तक संस्थान नाबार्ड के वित्तिय सहयोग से अजमेर व नागौर जिले में 2250 महिला स्वयं सहायता समूहों का गठन करके उनको आत्मनिर्भर बनाया जा चुका है। वर्तमान में अजमेर जिले में 1000 समूह व नागौर में 600 समूह का संचालन किया जा रहा है।

समूह से जुड़ी महिलाओं को 15 हजार से 75 हजार रूपये बैंक लोन समूह की गारंटी पर मिल जाता है। जिससे महिला अपनी आजिविका को बढाने का कार्य कर सकती है। महिला समूहों का गठन ग्रामीण क्षेत्रों में किया जाता है ताकि महिलाऐं आत्मनिर्भर बन सकें। इस प्रकार महिलायें स्वयं सहायता समूह के माध्यम से ग्राम पंचायत, अन्य सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं के सम्पर्क में आने से सामाजिक विकास में भी भागीदारी सुनिश्चित हो रही है। नाबार्ड का मुख्य उद्देश्य समूह गठन करके संगठित करना है। संस्थान उसी उद्देश्य के अनुरूप कार्य कर रही है।

संस्थान **ICICI** बैंक के साथ जुड़कर समूहों को उनकी आवश्यकता के अनुसार बैंक लोन दिलवाता है। समूह को प्रथम लोन प्रति महिला को 15000/– रू. का दिलवाती है ताकि महिला बैंक और समूह में लेनदेन की जानकारी हो सकें उसके बाद समूह की बचत के अनुसार **ICICI** बैंक लोन देती है। **ICICI** बैंक हर माह संस्थान द्वारा संचालित समूहों को प्रति माह 2 से 3 करोड़ रूपये का बैंक लोन देती है। संस्थान के समूहों की **100%** रिकवरी है जो कि समूहों की गुणवत्ता व जागरूकता को दर्शाती है।

उद्देश्य :–

- अलग–अलग महिलाओं को एक समूह में संगठित करना।
- समूह में बचत करवाना सिखाना।
- महिलाओं को समूह के माध्यम से बैंक से जुड़ाव करना।
- महिलाओं के हुनर को निखारना।

- ❋ सरकारी व गैर सरकारी संगठनों से जुड़ाव करना
- ❋ महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना।
- ❋ महिलाओं को स्वरोजगार के प्रति जागरूक करना।
- ❋ बैंकों से ऋण की पूर्ति करना।
- ❋ बाल विवाह व कन्या भ्रूण हत्या को रोकना।
- ❋ स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाना।
- ❋ ज्यादा से ज्यादा महिलाओं को रोजगार से जोड़ना।
- ❋ शिक्षित करना।
- ❋ महिलाओं द्वारा बनाये गये उत्पाद को उचित दामों में बाजार में बेचना।

रणनीति :–

- ❋ महिलाओं को जागरूक करके सरकारी व गैर सरकारी गतिविधियों में ज्यादा सहभागी बनाना।
- ❋ गाँव, क्षेत्र व महिलाओं का चयन करके समूह गठन करना। ❋ बैंको से जोड़कर ऋण उपलब्ध कराना।
- ❋ महिलाओं की आवश्यकता पड़ने पर महिलाओं से मदद करवाना। ❋ बचत की आदत निरन्तर डालना।

समूह बचत खाता खुलवाना :– नाबार्ड के वित्तिय सहयोग से गठित महिला स्वयं सहायता समूहों का गठन कर के 6 माह बाद **ICICI** बैंक में समूह का बचत खाता खुलवाया जाता है ताकि समूह का बैंक से जुड़ाव हो सके और बैंक की गतिविधियों के बारे में जानकारी मिल सकें। जब समूह को ऋण लेने की आवश्यकता हो तब बैंक लोन के लिए समूह आवेदन कर सके।

समूह सदस्यों को बीमा से जोड़ना :– महिला समूह के सदस्यों को बीमा के प्रति जागरूक करना और लोन का बीमा के साथ बीमा से जोड़ना ताकि भविष्य में महिला के साथ किसी प्रकार की दुर्घटना हो तो उसके परिवार को बीमा से अधिक सहायता मिल सकें।

शिविरों का आयोजन :– स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाओं को स्वास्थ्य शिविरों से जोड़कर लाभान्वित किया। जैसे की महिला कानून, श्रमिक के अधिकार, श्रमिक कार्ड बनवाना, परिवार नियोजन शिविर इत्यादि शिविरों के साथ हर वर्ष महिला दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। उसमें महिलाओं द्वारा किये गये कार्यों व अनुभवों का आपस में बताया जाता है। ताकि एक–दूसरी महिलाओं से प्रेरणा मिलती है।

समूह प्रशिक्षण :– नाबार्ड के वित्तिय सहयोग से गठित महिला स्वयं सहायता समूहों को क्षमतावर्धन, लीडरशिप, लघु उद्योग व समूह संचालन के प्रशिक्षण समय–समय पर दिये जाते है ताकि समूहों की गुणवत्ता बनी रहें और समूह सदस्यों को रोजगार से जोड़ा जा सकें।

समूह ऑडिट :– संस्थान द्वारा गठित समूहों की हर वर्ष ऑडिट की जाती है और समूहों की वित्तिय स्थिति का आंकलन किया जाता है। ऑडिट के बाद समूह लाभांष भी सदस्यों को वितरण किया जाता है।

समूह ग्रेडिंग :– महिला स्वयं सहायता समूहों की गुणवत्ता को जाँचने के लिए ग्रेडिंग की जाती है। और ग्रेडिंग के बाद जो भी समूह में खामिया रहती है उसके लिए योजना बनाकर प्रशिक्षण दिया जाता है।

क्र.सं.	जिलो का नाम	समूह की संख्या	बैंक लिंकेज
1	अजमेर	1000	1000
2	नागौर	300	300
	कुल	**1300**	**1300**

समूह बैंक लोन :– जब समूह गठन के 6 माह बाद समूह का बचत खाता खुल जाता है तब समूह बैंक से लोन लेने के लिए आवेदन करता है। बैंक लोन लेने के समय समूह के सभी सदस्यों का उपस्थित होना आवश्यक होता है ग्रुप फोटो ली जाती है ताकि भविष्य में कोई महिला इनकार नहीं कर सकती है क्योंकि ग्रुप फोटो के साथ लोन फाईल में समूह के सभी सदस्यों की जानकारी रहती है। लोन लेते समय समूह लोन राशि, लोन किस्त कितने माह में चुकता करना और बैंक लोन पेनल्टी के बारे में सभी सदस्यों को जानकारी रहती है।

आजीविका वर्धन गतिविधियाँ :– ग्रामीण महिला विकास संस्थान, बूबानी–अजमेर के द्वारा गठित महिला स्वयं सहायता समूहों का गठन व संचालन किया जा रहा है। समूहों को बचत के साथ–साथ आजीविका वर्धन की गतिविधियों की जानकारी दी जाती है और समय–समय पर प्रशिक्षित किया जाता है। ताकि महिला आत्मनिर्भर बने और आर्थिक रूप से भी सक्षम हो सकें। संस्थान विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं के माध्यम से आजीविका वर्धन गतिविधियों से जोड़ने में सफल होती है। ताकि समूह की महिला बैंक से लोन लेती है उसे समय पर बैंक को वापिस चुकता करने में सक्षम होती है।

महिला स्वयं सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत भिनाय ब्लॉक के 50 सदस्यों को कस्टमर हाईजिंग प्रोग्राम से जोड़ा गया जिसमें प्रति सदस्य 2.30 घण्टा टैक्टर द्वारा खेती हकाई कार्य किया गया जो **100%** मुफ्त था महिला सदस्यों को लगभग 100000/– रूपये का सीधा लाभ मिला साथ ही समय पर कार्य पूर्ण हो गया।

किसान उत्पादक संगठन कार्यक्रम, पं.स. - भिनाय (अजमेर)
Farmer Producer Organization Programme, Bhinai (Ajmer)

नाबार्ड के वित्तिय सहयोग से संस्थान के द्वारा अजमेर जिला मुख्यालय से 80 किमी. दूर नेशनल हाईवे 79 से 27 किमी. पूर्व दक्षिण में पंचायत समिति भिनाय के ग्राम पंचायत बुबकिया व लामगरा में 4 किसान समृद्धि प्रोड्यूसर कम्पनियों का गठन कर किसानों के सहयोग से संचालन किया जा रहा है। चारों कम्पनियाँ कम्पनी एक्ट में रजिस्टर्ड की हुई है। कम्पनी रजिस्ट्रेशन से उपभोक्ता व उत्पादनकर्ता के बीच की दूरी को कम कर बिचौलियों द्वारा किसानों के उत्पादनों को कम लागत में खरीदने से होने वाले किसानों के नुकसान को बचाया जा सके तथा समय पर स्थानिय स्तर पर खाद्, प्रमाणित बीज, ब्रान्डेड दवाईयाँ उपलब्ध करवाना मुख्य कार्य है तथा किसानों को अपने उत्पादन को अच्छे दामों से बिक्री करने हेतु मंच उपलब्ध हुआ। जहाँ किसानों को सरकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त हो सकें। किसानों के उत्पादन में वृद्धि करना, खर्च को कम करना, आमदनी बढ़ाने के उद्देश्य से एफ.पी.ओ. का संचालन किया जा रहा है।

कम्पनी रजिस्ट्रेशन पूर्व कार्यक्षेत्र का सर्वे किया जिसमें किसानों की आवश्यकता तथा क्षेत्र में मुख्य उत्पादन के बारे में जानकारी प्राप्त कि गई। साथ किसानों को कम्पनी गठन करने के बारे में जानकारी दी गयी। जिसमें खायडा व उदयपुरखेडा में मूंग उत्पादन तथा रैन व भैरूखेड़ा में कपास उत्पादन पर कार्य करना तय हुआ।

खायडा–उदयपुरखेड़ा–रैण–भैरूखेड़ा किसान समृद्धि प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड कमेटी गठन व रजिस्ट्रेशन– क्षेत्र में सर्वे अनुसार जिन किसानों के पास 1–15 बीघा जमीन है उन किसानों के साथ बैठक की गयी जिसमें

किसान समृद्धि प्रोड्यूसर कम्पनी के उद्देश्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई साथ ही उन्हीं किसानों के द्वारा कम्पनी बोर्ड का गठन किया गया। साथ कम्पनी रजिस्ट्रेशन करवाने हेतु निर्णय लिया गया। तथा कम्पनी के पाँच डायरेक्टर तथा पाँच प्रमोटर नियुक्त किये गये। जिनके हस्ताक्षर से कम्पनी एक्ट में कम्पनीयों का रजिस्ट्रेशन किया गया।

मुख्य उद्देश्य :–

- उत्पादन को अच्छे दामों में बिक्री करवाना।
- उत्पादनकर्त्ता व उपभोक्ता के मध्य दूरी कम करना।
- समय पर गुणवत्तायुक्त खाद–बीज उपलब्ध करवाना।
- नवीन तकनीकी एवं सरकारी योजनाओं से जुड़ाव करवाना।
- किसानों को सीधे मण्डी में ही अपना माल बिक्री करवाना।

शेयर धारकों की आय वृद्धि हेतु प्रयास– किसानो की आय वृद्धि हेतु रबी फसल में चने की अच्छी पैदावार हुई जिसे स्थानीय स्तर पर बेचने अथवा बेचने पर प्रति क्विंटल 3650 से 3825 रू. बिक रहा था सभी किसानों को अपनी चने की फसल उत्पादन को नेफड को बेचने हेतु प्रेरित किया गया सभी किसानों के आवश्यक दस्तावेज तैयार करवाये गये। उनकी चने की फसल कि बिक्री करवाई गई जिनका विवरण निम्न प्रकार है। किसान कि खसरा गिरदावरी रिर्पोट अनुसार अपने चने की फसल उत्पादन की बिक्री कर सकता था। जिसमें टोकन नम्बर व बिक्री दिनांक के साथ मात्रा की एम.एस. के जरिये किसान को सूचित किया गया जिसमें–

क्र.सं.	किसान कम्पनी का नाम	किसानो की संख्या	मात्रा (क्विंटल)	बिक्रीदर प्रति क्विंटल	राशि
1	खायडा किसान समृद्धि प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड	86	2240	4750	10640000
2	उदयपुर खेडा किसान समृद्धि प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड	77	1670	4750	7932500
3	भैरुखेडा किसान समृद्धि प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड	54	1240	4750	5890000
4	रैण किसान समृद्धि प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड	62	1430	4750	6792500
	कुल योग	**279**	**6580** क्विंटल		

स्थानीय व्यापारी	–	6580 क्विंटल x 3700 = 24346000
कृषि मण्डी	–	6580 क्विंटल x 3800 = 25004000
नेफड	–	6580 क्विंटल x 4750 = 31255000
किसानों को शुद्ध लाभ	–	6909000/-

बीज की उपलब्धता– किसानों की आय वृद्धि हेतु प्रमाणित बीज के उपयोग के लिए किसानों को प्रेरित किया गया तथा 70% किसानों द्वारा रबी व खरीफ की फसल में प्रमाणित बीज का उपयोग किया गया किसानों को अच्छी पैदावार मिलने से एफ.पी.ओ. के प्रति रूझान बढ़ने लगा। मूंग, उड़द, कपास की अच्छी पैदावार मिली साथ ही रबी फसल कि बुवाई अच्छी हुई मगर बाजार में बीज के भाव 70 रू. प्रति किलोग्राम थे किसान प्रोड्यूसर कम्पनी के द्वारा किसानों को राजसीड कोर्पोरेशन लिमिटेड से 50% सब्सीडी से बीज उपलब्ध करवाया गया। बीज की अच्छी गुणवत्ता होने के कारण उत्पादन अच्छा मिला। उपलब्ध बीज का विवरण–

किसानों की संख्या	चने का बीज क्विंटल	दर	सब्सीडी	लागत
		70 रू. प्रति किलो	35 रू. प्रति किलो	35 रू. प्रति किलो
245	4800 किलो	336000 / —	168000 / —	168000 / —

किसान समृद्धि प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड बैठकः— किसान समृद्धि प्रोड्यूसर कम्पनी लि. की बैठक हर माह में कि जाती है जिसमें सम्पादित किये गये कार्यो तथा आगामी कार्य योजना पर चर्चा एवं निर्णय लिये जाते है।

पी.आई.एम.सी. बैठक :— प्रोग्राम क्रियान्वयन निगरानी कमेठी की बैठक हर तीन माह में आयोजित कि जा रही है जिसमें नाबार्ड एल.डी.एम., नाबार्ड डी.डी.एम., संस्थान सचिव, कमेठी बोर्ड सदस्य एवं कम्पनी शेयरधारक किसानों, कृषि पर्यवेक्षक बैंक मैनेजर व पशुपालन विभाग कि उपस्थिति होती है। जिसमें तीन माह में किये गये कार्य तथा आगामी कार्य योजना पर चर्चा कि जाती है।

किसान शैक्षणिक भ्रमण :— राष्ट्रीय कृषि बीजीएं अनुसंधान केन्द्र तबीजी में आयोजित किसान संगोष्ठी कार्यक्रम में दो दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण चारों कम्पनी के किसानों का करवाया गया। जिसमें किसानों को कृषि के नवीन तकनीकियों के बारे में जानकारी दी गई विभिन्न बीजों कि नवीन किस्मों के बारे में अवगत करवाया फसलों के अच्छे उत्पादन तथा पानी की बचत हेतु ड्रीप सिस्टम फव्वारा सेट के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी पानी संग्रहण हेतु फार्म पोन्ड निर्माण पर विशेष जोर दिया गया।

कम्पनी बोर्ड सदस्यों का प्रशिक्षण :— कम्पनी के कार्यो का सफल संचालन तथा कम्पनी में आयोजित कार्यों पर निगरानी तथा सहयोग हेतु कम्पनी बोर्ड सदस्यों का स्थानीय स्तर पर सी.ई.ओ. के द्वारा प्रशिक्षण आयोजित करवाया गया जिसमें निरन्तर एग्रो फुड प्रोड्यूसर कम्पनी के अध्यक्ष द्वारा उनके अनुभवों से तथा उनके द्वारा कि जा रही गतिविधियों से अवगत करवाया गया। जिसमें कृषि विभाग कि योजनाओं से जुड़ने हेतु प्रेरित किया जिसमें फव्वारा सेट, ड्रिप सेट व फलदार पौधे लगवाने हेतु अपने अनुभवों से अवगत करवाया गया।

किसान उत्पादक संगठन कार्यक्रम, पं.स. थांवला (नागौर)
Farmer Producer Organization Programme, Thawala (Nagaur)

नाबार्ड के वित्तिय सहायता व मार्गदर्शन से ग्रामीण महिला विकास संस्थान द्वारा नागौर जिले में पंचायत समिति रियाबड़ी के ग्राम—कस्बा की ढाणी (थांवला) में निरन्तर एग्रो फुड प्रोड्यूसर कम्पनी लि. का संचालन किया जा रहा है। निरन्तर एग्रो फुड प्रोड्यूसर कम्पनी एक्ट में मार्च 2016 में रजिस्टर्ड करवाया गया। कम्पनी के माध्यम से किसानों की आय वृद्धि करवाने के लिए 500 किसान सदस्यों को कम्पनी से जोडा गया।

कम्पनी के मुख्य उद्देश्य :—

- ❇ किसानों में जागरूकता बढ़ाना।
- ❇ उत्पादित फसलों की ग्रेडिंग करवाना।
- ❇ समय पर गुणवक्तायुक्त खाद—बीज उपलब्ध करवाना।
- ❇ उपयोगकर्त्ता व उत्पादकर्त्ता के मध्य दूरी कम करना।
- ❇ किसानों का क्षमतावर्धन करना।
- ❇ किसानों को तकनीकी जानकारी देना।
- ❇ किसानों की आय वृद्धि करना।
- ❇ किसानों की बाजार तक पहुँच बनाना।

कृषक उत्पादक संगठनों के मुख्य कार्य :—

- ❇ नवीन तकनीकि को बढ़ावा देना।
- ❇ बाजार व्यवस्था अपनाना एवं ऋण से जोड़ना।
- ❇ आवश्यकता पूर्ति हेतु माल भंडारण।
- ❇ उत्पादित माल ग्रेडिंग करवाना

किसान उत्पादक संगठनों के सफल क्रियान्वयन हेतु गाँवों में किसानों के साथ बैठकों का आयोजन करना एवं सरकारी व गैर सरकारी कृषि योजनाओं की जानकारी देना। कृषि पर्यवेक्षकों व कृषि विज्ञान केन्द्र के विशेषज्ञों से प्रशिक्षण दिलवाया। किसानों को समय–समय पर खाद बीज दिलवाने के लिये कार्य कर रही है। किसान संगठन के सफल संचालन हेतु निम्न गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है।

मासिक बैठक :– कम्पनी बोर्ड सदस्यों व कम्पनी शेयर धारको द्वारा मासिक बैठक आयोजित की जाती है। जिसमें कार्यों की समीक्षा तथा आगामी माह की कार्य योजना तैयार की जाती है।

पी.आई.एम.सी. बैठक :– प्रोजेक्ट मॉनिटरिंग कमेठी द्वारा हर त्रैमास में किये गये कार्यों की मॉनिटरिंग की जाती है। साथ ही आगामी त्रैमास में किये जाने वाले कार्यों के बारे में जानकारी प्राप्त की जाती है। जिसमें नाबार्ड अधिकारी, कृषि पर्यवेक्षक, संस्थान सचिव, कम्पनी बोर्ड सदस्यों की उपस्थिति में कम्पनी सी.ई.ओ. द्वारा कम्पनी कार्यों से अवगत करवाया जाता है।

वर्मी कम्पोस्ट खाद यूनिट :– कम्पनी द्वारा किसानों को अपने खर्चे कम करने तथा उत्पादन में वृद्धि करने हेतु वर्मी कम्पोस्ट खाद – 100 यूनिटों का निर्माण करवाया गया तथा यूनिट निर्माण हेतु किसानों को कृषि विभाग द्वारा प्रति यूनिट 12000/– रुपये अनुदान उपलब्ध करवाए जाने हेतु आवेदन कराये गये जिनकी सब्सीडी शीघ्र किसान को मिल जायेगी।

खाद बीज दुकान :– शेयरधारकों व अन्य किसानों को समय पर खाद–बीज उपलब्ध करवाया गया है साथ ही स्थानीय क्षैत्र में अच्छा उत्पादन देने वाली फसलों जिसमें – मूंग, मूंगफली के रिसर्च बीजों का भी उपयोग किया गया। जिनका किसानों को अच्छा उत्पादन मिला।

शैक्षणिक भ्रमण :– किसानों को नवीन जानकारी व तकनीकि जानकारी उपलब्ध करवाने काजरी संस्थान का तीन दिवसीय भ्रमण करवाया गया। जिसमें कृषक मेले में किसानों ने जानकारी प्राप्त की तथा विभिन्न बीजीय किस्मों से अवगत हुए।

सहयोगी संस्थाएँ

1. द् हंस फाउण्डेशन, नई दिल्ली।
2. नाबार्ड, जयपुर।
3. सेन्टर फॉर माईक्रो फाईनेन्स, जयपुर।
4. चोलामण्डल–तमिलनाडु (चेन्नई)।
5. साईट सेवर्स, नई दिल्ली।
6. सर रतन टाटा ट्रस्ट–मुम्बई।
7. केन्द्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड, जयपुर
8. भारतीय जीवन बीमा निगम, अजमेर
9. राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान, जयपुर
10. टाटा ए.आई.ए. सी.एस.आर.
11. आई.सी.आई.सी.आई. बैंक, जयपुर
12. अरावली–जयपुर।
13. प्रेक्सिस इंस्टीट्यूट फॉर पार्टिसिपेटरी–नोयडा
14. मिनाक्षी मिशन हॉस्पिटल और रिसर्च सेन्टर (विटामिन ऐन्जल) तमिलनाडु
15. राजस्थान स्टेट एड्स कंट्रोल सोसायटी, जयपुर
16. दासरा–मुम्बई, गूगल इण्डिया और सी.एफ.आई.एल.–मुम्बई

संस्थान की वर्तमान कार्यकारिणी

क्र.सं.	पदाधिकारी का नाम	पद	क्र.सं.	पदाधिकारी का नाम	पद
1	श्री अनिल कुमार माथुर	अध्यक्ष	6	श्रीमती रतना देवी	कार्यकारिणी सदस्य
2	श्री अनिरूद्ध विजयवर्गीया	उपाध्यक्ष	7	श्री ब्रिजेश कुमार अग्रवाल	कार्यकारिणी सदस्य
3	श्री शंकर सिंह रावत	सचिव	8	श्रीमती स्वाति शर्मा	कार्यकारिणी सदस्य
4	श्री शम्भू सिंह रावत	कोषाध्यक्ष	9	श्रीमती कविता जैन	कार्यकारिणी सदस्य
5	श्री मनोज शर्मा	कार्यकारिणी सदस्य			

GRAMIN MAHILA VIKAS SANSTHAN (GMVS)

Organizational Structure

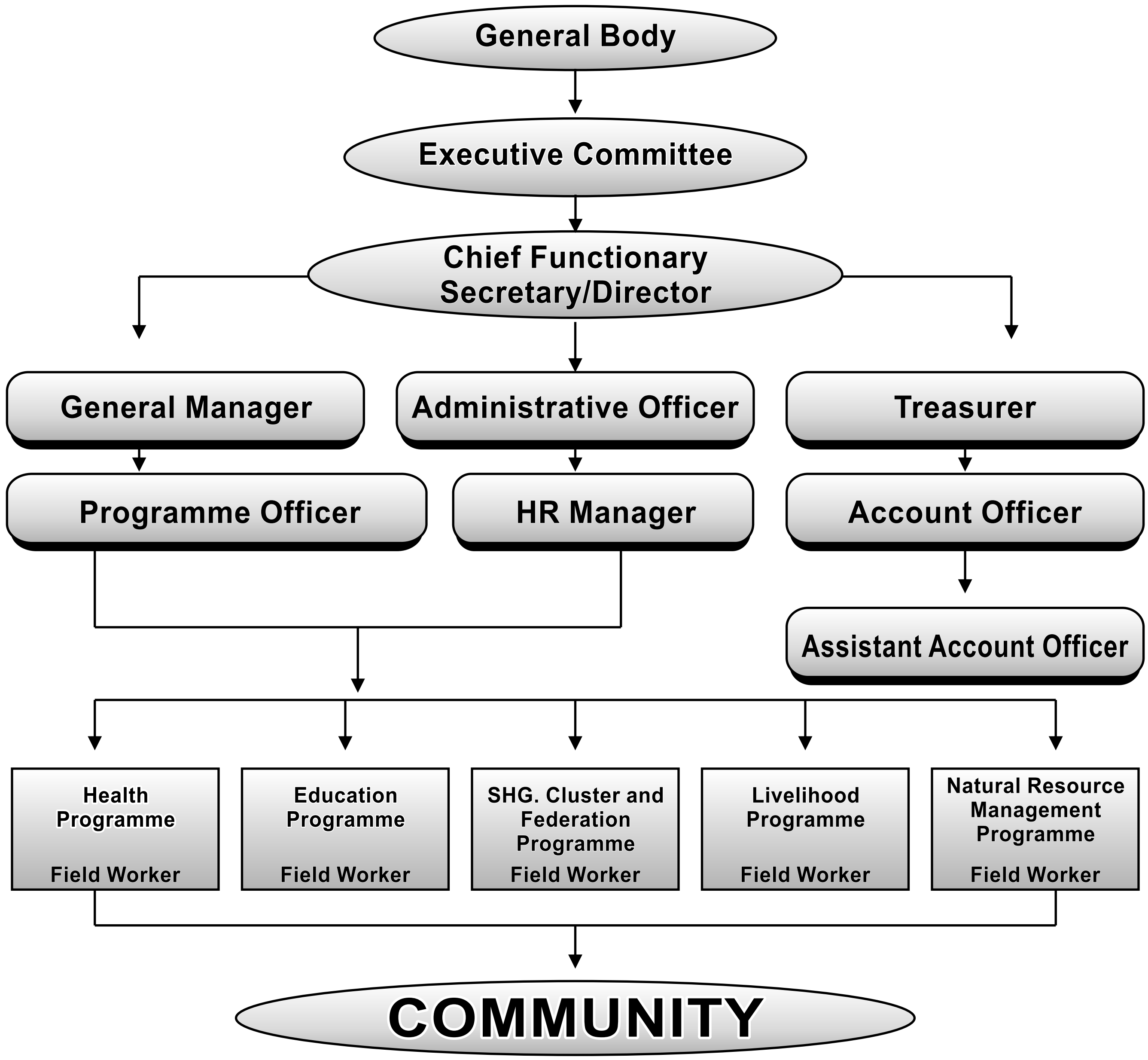

GMVS

Gramin Mahila Vikas Sansthan

ABRIDGED INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDING 31/03/2020

EXPENDITURE	AMOUNT ₹	INCOME	AMOUNT ₹
To Project Expences:	1,41,42,532	By Grant -Received	14703170
To Administrative Expenses	13,22,927	By Interest	20128
		By Contribution & Other Income	172193
		By Excess of Exp. Over Income	569968
Total	1,54,65,459	Total	1,54,65,459

In terms of our Audit Report even date attached.

For S S Verma & Co
Chartered Accountants

(S. S. Verma)
Prop.

Jaipur
September 23, 2020

For Gramin Mahila Vikas Sansthan

(Shankar Singh Rawat)
Secretary

सचिव
ग्रामीण महिला विकास संस्थान
बूबानी, किशनगढ़
जिला–अजमेर (राज.)

ABRIDGED BALANCE SHEET AS AT 31/03/2020

LIABILITIES	AMOUNT ₹	ASSETS	AMOUNT ₹
General Fund	22,07,436	Fixed Assets	10,88,559
		Grant Receivable	4,54,875
Current Liabilities	12,44,363	Other Current Assets	13,60,263
		Cash in Hand	13,930
		Cash at Bank	5,34,172
Total	34,51,799	Total	34,51,799

In terms of our Audit Report even date attached.

For S S Verma & Co
Chartered Accountants

(S. S. Verma)
Prop.

Jaipur
September 23, 2020

For Gramin Mahila Vikas Sansthan

(Shankar Singh Rawat)
Secretary

सचिव
ग्रामीण महिला विकास संस्थान
बूबानी, किशनगढ़
जिला–अजमेर (राज.)

एक नजर ...

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

स्वयं सहायता समूह कार्यक्रम

एक नजर ...

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

हंस मोबाईल मेडिकल सर्विसेज कार्यक्रम

एक नजर ...

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

हंस मोबाईल मेडिकल सर्विसेज कार्यक्रम

GMVS

एक नजर ...

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

राही ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम

GMVS

एक नजर ...

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

राही ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम

एक नजर ...

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

टारगेट इन्टरवेन्शन माईग्रेन्ट कार्यक्रम, चित्तौड़गढ़

GMVS

एक नजर ...

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

टारगेट इन्टरवेन्शन माईग्रेन्ट कार्यक्रम

GMVS

एक नजर ...

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

ऊँचाईयों के शिखर की ओर बढ़ते कदम

ग्रामीण महिला विकास संस्थान (GMVS, Ajmer)

ऊँचाईयों के शिखर की ओर बढ़ते कदम

सेवाओं में बढ़ते कदम ....

ग्रामीण महिला विकास संस्थान (GMVS)

मुख्य कार्यालय

प्लाट नं. 111–116,
सिद्धि विनायक कॉलोनी,
खोड़ा गणेश रोड़
मदनगंज–किशनगढ़–305801
जिला–अजमेर (राज.) भारत
मोबाईल : +91–9672979032
ई–मेल : bubanigmvs@gmail.com
Visit us : www.gmvs.ngo

क्षेत्रीय कार्यालय

एन.एच. 79, प्यारे पंजाब होटल,
हमीरगढ़, जिला–भीलवाड़ा
311025 (राज.) भारत
मोबाईल : +91–9079207103
मोबाईल : +91–9829835177
ई–मेल :
gmvsajmer@gmail.com

क्षेत्रीय कार्यालय

125, भगतसिंह पार्क,
सामुदायिक भवन के पास,
चित्तौड़गढ़ (राज.) भारत
मोबाईल : +91–9929259050
मोबाईल : +91–9829133882
ई–मेल :
gmvschittorgarh@gmail.com

क्षेत्रीय कार्यालय

डेगाना रोड़, ग्राम–भैरूंदा
341031 जिला–नागौर
(राज.) भारत
मोबाईल : +91–9672979033
मोबाईल : +91–9672979038
ई–मेल :
ssrawatgmvs@gmail.com